CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2016 with Solution PDF-Set 2/2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 103**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने जहाँ एक ओर शिक्षा और रोज़गार के लिए अनेक अवसर प्रदान किए हैं वहीं हिंदी भाषा के लिए भी। बाज़ार में अधिसंख्य उपभोक्ता चूँकि हिंदी भाषी हैं इसलिए उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन के लिए हिंदी की आवश्यकता है। देश में भी हिंदी का चलन बढ़ा है। निहित राजनीतिज्ञ स्वार्थों को किनारे कर दें तो हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। हिंदीतर भाषा-भाषी राज्यों, विशेषकर दक्षिण के राज्यों के प्रमुख नगरों में हिंदी प्रसार का एक कारक 'मार्केट' से हिंदी का जुड़ाव भी है। हिंदी का कारवाँ भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बढ़ रहा है। दुबई, रूस और ब्रिटेन में तो पहले से ही हिंदी अनजान भाषा नहीं थी; आज अमेरिका, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी हिंदी व्यवहार में आ रही है। जिन देशों में साम्राज्यवादी दिनों में भारतीय मज़दूर ले जाए गए थे वे आज भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को पूरे उत्साह के साथ अपनाए हुए हैं। उनमें मॉरिशस, फ़िज़ी, ट्रिनीडाड, सूरिनाम जैसे देश हैं। वहाँ हिंदी बाज़ार की ही भाषा नहीं, साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है। उनकी पीड़ा ये है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। ये लोग बँधुआ मज़दूर के रूप में ले जाए गए थे परंतु आज हमारे सांस्कृतिक दूत हैं। यह ऐसे ही है जैसे हज़ारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों ने या बाद में बौद्धभिक्षुओं ने समुद्रों, पर्वतों को लाँघकर भारतीयता का प्रचार किया था। भारत हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तो उसके साथ यह दायित्व भी उसी का है कि विश्वभर में बिखरे हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधनों से समर्थन प्रदान करे। [15 अंक]

1(क). उपर्युक्त अनुच्छेद का एक शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक में गद्यांश के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त और व्यापक संकेत होना चाहिए।
- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: पूरे अनुच्छेद का केंद्र पहचानना अनुच्छेद में मुक्त बाज़ार के कारण हिंदी के बढ़ते व्यवहार, देश-विदेश में उसके प्रसार और प्रवासी भारतीयों के योगदान की चर्चा है। इसलिए शीर्षक केवल व्यापार या रोज़गार तक सीमित नहीं होना चाहिए।

चरण 2: उपयुक्त शीर्षक चुनना आरंभ में बाज़ार और हिंदी का संबंध बताया गया है, जबकि आगे दक्षिण भारत तथा विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी की स्थिति स्पष्ट की गई है। इन सभी बातों को जोड़ने वाला केंद्रीय भाव हिंदी का विस्तार है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: "हिंदी का बढ़ता वैश्विक प्रसार।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय आरंभ, मध्य और अंत में बार-बार उभरने वाले केंद्रीय विचार को एक छोटे वाक्यांश में बाँधें।

1(ख). मुक्त बाज़ार के किन लाभों का उल्लेख किया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में बताए गए लाभों को गद्यांश के आरंभिक कथन और आगे दिए गए विवरण से पहचानना है।
- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: शिक्षा और रोज़गार के अवसर गद्यांश के अनुसार मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने शिक्षा और रोज़गार के लिए अनेक अवसर प्रदान किए हैं। लेखक ने इन दोनों क्षेत्रों का स्पष्ट उल्लेख किया है; इसलिए उत्तर में दोनों को शामिल करना आवश्यक है। यहाँ किसी अन्य आर्थिक लाभ की कल्पना करके जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: हिंदी के लिए नए अवसर मुक्त बाज़ार ने हिंदी भाषा के लिए भी नए अवसर बनाए हैं। अधिकतर उपभोक्ता हिंदी भाषी होने के कारण उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी का उपयोग आवश्यक हुआ है। इस व्यावहारिक उपयोग से उसका चलन और प्रचार-प्रसार बढ़ा है। इस प्रकार लाभ केवल व्यक्तियों की शिक्षा और आजीविका तक सीमित नहीं, भाषा के विस्तार से भी जुड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त बाज़ार ने शिक्षा और रोज़गार के अवसर बढ़ाए तथा विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की उपयोगिता और उसका प्रचार-प्रसार बढ़ाया है।

त्वरित सुझाव: लाभ पूछे जाने पर गद्यांश के पहले वाक्य की तीन कड़ियाँ याद रखें: शिक्षा, रोज़गार और हिंदी के नए अवसर।

1(ग). मुक्त बाज़ार से हिंदी को क्या लाभ हुआ है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में हिंदी को हुए लाभ के साथ उसका कारण भी गद्यांश के आधार पर स्पष्ट करना है।
- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: हिंदी को हुआ लाभ मुक्त बाज़ार ने हिंदी को उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन की उपयोगी भाषा बनाया है। इससे हिंदी का व्यवहार और प्रचार-प्रसार बढ़ा है। वह केवल साहित्य या सामान्य बातचीत तक सीमित न रहकर बाज़ार के कामकाज से भी जुड़ी है। हिंदीतर राज्यों के प्रमुख नगरों में उसके बढ़ते प्रयोग का एक कारण यही बाज़ार से जुड़ाव है।

चरण 2: लाभ का कारण समझना बाज़ार में अधिसंख्य उपभोक्ता हिंदी भाषी हैं। उन उपभोक्ताओं तक उत्पादों की जानकारी पहुँचाने और उनसे व्यापारिक संवाद करने के लिए हिंदी की आवश्यकता पड़ती है। इसीलिए व्यापार तथा विज्ञापन में हिंदी अपनाई जाती है। उत्तर में उपभोक्ताओं की भाषा और बाज़ार की भाषा के इस संबंध को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त बाज़ार से हिंदी का उपयोग और प्रसार बढ़ा है, क्योंकि अधिकांश उपभोक्ता हिंदी भाषी हैं और उन तक पहुँचने के लिए व्यापार, विपणन तथा विज्ञापन में हिंदी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: "क्या लाभ के बाद "क्यों का उत्तर अवश्य दें: हिंदी का बढ़ता उपयोग लाभ है और हिंदी भाषी उपभोक्ताओं की अधिकता उसका कारण।

1(घ). दक्षिण भारत में हिंदी की क्या स्थिति है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्थिति और उसके कारण को अलग-अलग पहचानकर गद्यांश के कथन से जोड़ना चाहिए।
- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: दक्षिण भारत की स्थिति दक्षिण भारत के राज्यों के प्रमुख नगरों में हिंदी का प्रचार-प्रसार और व्यवहार बढ़ रहा है। गद्यांश हिंदीतर भाषा-भाषी राज्यों का उल्लेख करते हुए दक्षिण के राज्यों को विशेष रूप से सामने रखता है। अतः यह कहना उचित है कि वहाँ हिंदी का चलन बढ़ा है; यह दावा करना उचित नहीं होगा कि सभी लोगों की मातृभाषा हिंदी बन गई है।

चरण 2: बढ़ते प्रसार का कारण हिंदी का बाज़ार से जुड़ाव इस प्रसार का एक कारक है। अधिकतर उपभोक्ता हिंदी भाषी होने के कारण उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता पड़ती है। इसी व्यावहारिक आवश्यकता से दक्षिण के प्रमुख नगरों में उसका उपयोग बढ़ता है। लेखक इसे एक कारण बताता है, इसलिए इसे अकेला और एकमात्र कारण नहीं कहना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में हिंदी का चलन और प्रसार बढ़ रहा है। इसका एक कारण व्यापार और बाज़ार की आवश्यकताओं के साथ हिंदी का जुड़ना है।

त्वरित सुझाव: स्थिति बताते समय "प्रमुख नगरों में प्रसार बढ़ रहा है लिखें और कारण में हिंदी के बाज़ार तथा व्यापार से जुड़ाव का उल्लेख करें।

1(ङ). साम्राज्यवादी दौर में भारतीय विदेशों में क्यों और कहाँ-कहाँ ले जाए गए? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में दिए उद्देश्य और स्थानों को स्पष्ट रूप से अलग करके उत्तर देना है।

- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: विदेश ले जाने का उद्देश्य साम्राज्यवादी दौर में भारतीयों को मज़दूरी कराने के लिए विदेश ले जाया गया था। गद्यांश आगे स्पष्ट करता है कि ये लोग बँधुआ मज़दूर के रूप में ले जाए गए थे। इसलिए उनके विदेश जाने को केवल स्वैच्छिक पर्यटन या व्यापार कहना गद्यांश के कथन के अनुरूप नहीं होगा। उत्तर का मुख्य बिंदु बँधुआ श्रम है।

चरण 2: संबंधित देशों की पहचान इस प्रसंग में मॉरिशस, फ़िज़ी, ट्रिनीडाड और सूरिनाम का उल्लेख है। वहाँ भारतीय मूल के लोग आज भी अपनी भारतीय पहचान पर गर्व करते हैं और हिंदी को उत्साह से अपनाए हुए हैं। दुबई, रूस, ब्रिटेन आदि के नाम गद्यांश में हिंदी के सामान्य विदेशी प्रसार के संदर्भ में आए हैं; उन्हें इस विशेष सूची के स्थान पर नहीं लिखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीयों को साम्राज्यवादी दौर में बँधुआ मज़दूर के रूप में श्रम कराने के लिए मॉरिशस, फ़िज़ी, ट्रिनीडाड और सूरिनाम जैसे देशों में ले जाया गया था।

त्वरित सुझाव: "क्यों के लिए बँधुआ मज़दूरी और "कहाँ के लिए गद्यांश में उसके तुरंत बाद आए चार देशों के नाम चुनें।

1(च). उन प्रवासियों की पीड़ा क्या है और कहाँ तक ठीक है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पीड़ा बताने के बाद उसके औचित्य को गद्यांश में दिए योगदान और भारत के दायित्व से जोड़ना है।
- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: प्रवासियों की शिकायत प्रवासी भारतीयों की पीड़ा है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। वे दूर रहकर भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को उत्साह से अपनाए हुए हैं। वहाँ हिंदी केवल बाज़ार की भाषा नहीं, बल्कि साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है। इस प्रकार उनका भारत से भावनात्मक और सांस्कृतिक संबंध बना हुआ है।

चरण 2: पीड़ा के औचित्य की व्याख्या उनकी शिकायत उचित प्रतीत होती है, क्योंकि वे विदेशों में हिंदी और भारतीय संस्कृति को जीवित रखकर सांस्कृतिक दूत का काम कर रहे हैं। ऐसे लोगों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। गद्यांश के अनुसार विश्वभर के हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधन संबंधी समर्थन देना भारत का दायित्व है। उनके योगदान को देखते हुए यह सहयोग और आत्मीयता की अपेक्षा न्यायसंगत है।

चरण 3: निष्कर्ष उनकी पीड़ा यह है कि भारत ने उन्हें भुला दिया है। यह पीड़ा उचित है, क्योंकि हिंदी और भारतीय संस्कृति को सँजोने वाले इन भारतवंशियों को भारत से सम्मान और सहयोग मिलना चाहिए।

त्वरित सुझाव: औचित्य लिखते समय प्रवासियों के हिंदी-संरक्षण को भारत के बौद्धिक और संसाधन संबंधी सहयोग के दायित्व से जोड़ें।

1(छ). "वे बँधुआ मज़दूर आज भारत के सांस्कृतिक दूत हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का भावार्थ उसके ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान सांस्कृतिक योगदान के आधार पर स्पष्ट करना है।
- उत्तर के सभी तथ्य और व्याख्याएँ दिए गए गद्यांश से ही ग्रहण करने हैं।

चरण 1: बँधुआ मज़दूर से सांस्कृतिक प्रतिनिधि तक जिन भारतीयों को साम्राज्यवादी काल में बँधुआ मज़दूर बनाकर विदेश ले जाया गया था, वे आज भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं। उन्होंने परदेश में अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को नहीं छोड़ा है। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में कथन उनके श्रमिक अतीत और वर्तमान सांस्कृतिक योगदान को जोड़ता है।

चरण 2: सांस्कृतिक दूत कहलाने का आधार ये भारतवंशी हिंदी को उत्साह से अपनाए हुए हैं। उनके देशों में हिंदी व्यापार के साथ साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है। इस तरह वे विदेशों में हिंदी और भारतीयता का प्रसार करते हैं। जैसे ऋषियों और बौद्धभिक्षुओं ने दूर देशों में भारतीयता पहुँचाई थी, वैसे ही ये प्रवासी उस सांस्कृतिक संबंध को आगे बढ़ाते हैं। यहाँ दूत से आशय सरकारी राजनयिक पद नहीं, भारतीय संस्कृति के वाहक से है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि कभी बँधुआ श्रमिक बनाकर विदेश ले जाए गए भारतवंशी आज हिंदी और भारतीय संस्कृति को सँजोकर तथा उनका प्रसार करके भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि बने हुए हैं।

त्वरित सुझाव: "सांस्कृतिक दूत का अर्थ समझाते समय हिंदी, साहित्य, पत्रकारिता और भारतीय पहचान के संरक्षण को आधार बनाएँ।

1(ज). हिंदी के अधिक प्रचार-प्रसार के लिए भारत को क्या करना चाहिए – दो सुझाव दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में गद्यांश के अंतिम वाक्य के आधार पर भारत के दो दायित्व स्पष्ट करने हैं।
- हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाना और विदेशों में बसे हिंदीभाषियों को सहयोग देना परस्पर जुड़े कार्य हैं।

चरण 1: अंतरराष्ट्रीय मान्यता का प्रयास भारत को हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए निरंतर और प्रभावी प्रयास करने चाहिए। इससे हिंदी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा और पहचान मिलेगी। गद्यांश में भारत की इसी प्रतिबद्धता का उल्लेख है।

चरण 2: विदेशों में हिंदीभाषियों को सहायता भारत को विश्वभर में बिखरे हिंदीभाषियों और भारतवंशियों को बौद्धिक सहयोग तथा आवश्यक संसाधन देने चाहिए। ये लोग विदेशों में हिंदी को बाजार के साथ साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी बनाए हुए हैं। इसलिए उनका सहयोग करना हिंदी के प्रचार को मजबूत करेगा और भारत से उनके सांस्कृतिक संबंध को सहारा देगा।

चरण 3: निष्कर्ष दो सुझाव हैं: हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के प्रयास तेज किए जाएँ तथा विश्वभर के हिंदीभाषियों को बौद्धिक सहयोग और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ।

त्वरित सुझाव: दो सुझाव लिखते समय अंतिम वाक्य के दोनों आधार पकड़ें: अंतरराष्ट्रीय मान्यता और हिंदीभाषियों को सहयोग।

2. तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।
आज सिंधु ने विष उगला है
लहरों का यौवन मचला है
आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार।
यह असीम निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार।
लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड़ में साहस तोलो
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफ़ानों का प्यार।
सागर की अपनी क्षमता है
पर नाविक भी कब थकता है
जब तक साँसों में स्पंदन है
उसका हाथ नहीं रुकता है
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार। [5 अंक]

2(क). कवि नाविक से क्या अनुरोध कर रहा है और क्यों? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता के आरंभिक आह्वान से अनुरोध और मानव के अजेय साहस से उसका कारण समझना है।
- नाविक संघर्षरत मानव तथा तूफ़ान जीवन की कठिनाइयों के प्रतीक हैं।

चरण 1: अनुरोध पहचानना कवि नाविक से अपनी पतवार तूफ़ानों की ओर मोड़ने का अनुरोध करता है। वह चाहता है कि नाविक संकट देखकर पीछे हटने के बजाय साहस के साथ उसका सामना करे।

चरण 2: अनुरोध का कारण बताना कठिन परिस्थितियों में ही मनुष्य के साहस और संघर्षशीलता की परीक्षा होती है। कविता कहती है कि मानव ने कभी हार नहीं मानी; इसलिए नाविक अपने निरंतर प्रयास से उग्र समुद्र की चुनौती भी स्वीकार कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि नाविक से तूफ़ानों की ओर पतवार मोड़ने को कहता है, क्योंकि वह चाहता है कि मनुष्य साहसपूर्वक कठिनाइयों का सामना करके अपनी अजेय संघर्षशक्ति सिद्ध करे।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से बनाएँ: पहले पतवार मोड़ने का अनुरोध, फिर साहस की परीक्षा वाला कारण।

2(ख). कवि के अनुसार समुद्र को क्या पहचान लेना चाहिए? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समुद्र के लिए प्रयुक्त पहचानने के आग्रह का संबंध मानव के हार न मानने से है।

- कविता प्रकृति की विराटता के सामने मनुष्य के साहस और दृढ़ता को स्थापित करती है।

चरण 1: समुद्र को संबोधित पंक्तियाँ समझना कवि कहता है कि समुद्र अपनी सीमा जाने और पहचान ले कि मिट्टी से बना दिखाई देने वाला मनुष्य भी अपराजेय संकल्प रखता है। उसका शरीर सीमित है, पर उसका साहस और आत्मविश्वास बहुत बड़ा है।

चरण 2: मानव का परिचय स्पष्ट करना मनुष्य कठिनाइयों के सामने हार स्वीकार नहीं करता। नाविक के निरंतर चलते हाथ और सातों सागर पार करने का उल्लेख इसी दृढ़ता का प्रमाण हैं। समुद्र अपनी शक्ति के बल पर मानव को पराजित मानकर नहीं चल सकता।

चरण 3: निष्कर्ष समुद्र को पहचान लेना चाहिए कि मिट्टी का बना मनुष्य भी साहसी, संकल्पवान और हार न मानने वाला है; वह संघर्ष करके उसकी विकरालता को चुनौती दे सकता है।

त्वरित सुझाव: समुद्र की पहचान को उसकी गहराई से न जोड़ें; उत्तर का आधार मानव की हार न मानने वाली शक्ति है।

2(ग). नाविक के स्वभाव और संघर्ष को स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाविक के गुण उसके कार्य और विपत्ति के प्रति व्यवहार से स्पष्ट करने हैं।
- साँसों में स्पंदन रहने तक हाथ न रुकने की बात उसकी कर्मठता का आधार है।

चरण 1: स्वभाव के गुण बताना नाविक साहसी, परिश्रमी, धैर्यवान और दृढ़ निश्चयी है। वह उग्र लहरों और तूफ़ान से भयभीत होकर पीछे नहीं हटता। कविता में उसका न थकना और निरंतर पतवार चलाना उसके अटल आत्मविश्वास को दिखाता है।

चरण 2: संघर्ष का स्वरूप बताना वह समुद्र की विकराल लहरों और आँधी के बीच संघर्ष करता है। जब तक उसमें जीवन है, उसका हाथ नहीं रुकता। इसी लगातार प्रयास के बल पर वह सातों सागर पार करता है और कठिनाइयों पर विजय की संभावना सिद्ध करता है।

चरण 3: निष्कर्ष नाविक साहसी, कर्मठ और कभी हार न मानने वाला है। वह जीवन के अंतिम क्षण तक लहरों और तूफ़ानों से संघर्ष करते हुए पतवार चलाता रहता है।

त्वरित सुझाव: गुण लिखकर उनके साथ प्रमाण जोड़ें: निरंतर चलती पतवार उसकी कर्मठता और दृढ़ता दिखाती है।

2(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'कभी-कभी मिलता जीवन में तूफ़ानों का प्यार' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तूफ़ान का प्यार एक लाक्षणिक प्रयोग है जो संकट में मिलने वाले अवसर को व्यक्त करता है।
- भावार्थ में कठिनाई और उससे विकसित होने वाले साहस का संबंध स्पष्ट करना है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ खोलना यहाँ तूफ़ान जीवन के संकटों और चुनौतियों का प्रतीक है। उसका प्यार मिलने का अर्थ है ऐसे कठिन अवसर मिलना जिनमें मनुष्य को अपने साहस, धैर्य और शक्ति को परखने का अवसर प्राप्त हो।

चरण 2: पंक्ति का संदेश बताना चुनौतियाँ मनुष्य को संघर्ष करना सिखाती हैं और उसकी छिपी क्षमता सामने लाती हैं। इसलिए कवि कठिनाइयों से घबराने के बजाय उनका स्वागत करने को कहता है। यहाँ प्यार का अर्थ तूफ़ान का सचमुच स्नेह करना नहीं, बल्कि संघर्ष से मिलने वाला लाभ है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि जीवन में कठिन चुनौतियाँ कभी-कभी ही मिलती हैं। वे साहस और आत्मविश्वास की परीक्षा लेकर उन्हें निखारती हैं; इसलिए उनका सामना उत्साह से करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: प्यार का शाब्दिक अर्थ न लें; संकट को साहस निखारने वाला अवसर बताकर भावार्थ लिखें।

2(ङ). काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव में पूरी कविता को जोड़ने वाला जीवन-संदेश देना है।
- नाविक, समुद्र और तूफ़ान के माध्यम से संघर्षशील मानव की शक्ति व्यक्त हुई है।

चरण 1: कविता के प्रतीक जोड़ना नाविक जीवन में आगे बढ़ते मानव का और तूफ़ानी समुद्र कठिन परिस्थितियों का प्रतीक है। कवि नाविक को संकट की ओर पतवार मोड़ने को कहकर चुनौतियों से पलायन करने के बजाय उनका सामना करने की प्रेरणा देता है।

चरण 2: मूल संदेश निर्धारित करना मनुष्य अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, साहस और निरंतर कर्म से बड़ी बाधाएँ पार कर सकता है। साँसों में स्पंदन रहने तक हाथ न रुकने और सातों सागर पार करने की बात इसी विश्वास को पुष्ट करती है। संघर्ष ही मानव की क्षमता को पहचान देता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का केंद्रीय भाव है कि मनुष्य को कठिनाइयों से घबराए बिना साहस, दृढ़ संकल्प और निरंतर परिश्रम के साथ संघर्ष करना चाहिए; उसकी कर्मशक्ति बड़ी बाधाओं को पार कर सकती है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव में घटनाओं का सार भर न दें; साहस, निरंतर कर्म और कठिनाइयों पर विजय का संदेश जोड़ें।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए:

(क) प्रदूषण की समस्या (ख) भारत के नवयुवक (ग) नारी सशक्तीकरण (घ) विज्ञापन और हम [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और निष्कर्ष होना चाहिए। सामाजिक विषय पर कारणों, प्रभावों और व्यावहारिक उपायों का संतुलित उल्लेख अपेक्षित है।
- प्रश्न में चार विषय विकल्प के रूप में दिए गए हैं। अभ्यास की पूर्णता के लिए चारों के स्वतंत्र आदर्श निबंध नीचे दिए जा रहे हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति हर निबंध को उपयुक्त शीर्षक दें। पहले विषय का परिचय, फिर उसकी स्थिति और महत्त्व तथा अंत में सुधार की दिशा प्रस्तुत करें। भाषा सरल, अनुच्छेद परस्पर संबद्ध और विचार विषय पर केंद्रित रहें।

चरण 2: (क) आदर्श निबंध: प्रदूषण की समस्या प्रदूषण की समस्या

स्वच्छ पर्यावरण जीवन का आधार है। वायु, जल और भूमि में हानिकारक पदार्थों का बढ़ना प्रदूषण है। आज विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य ने प्राकृतिक संतुलन को गंभीर हानि पहुँचाई है।

वाहनों और कारखानों का धुआँ वायु को दूषित करता है। नदियों में छोड़ा गया औद्योगिक कचरा और गंदा पानी जल को विषैला बनाते हैं। रासायनिक खाद, कीटनाशक और प्लास्टिक भूमि की उर्वरता घटाते हैं। अनावश्यक शोर भी स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इनसे श्वास संबंधी रोग बढ़ते हैं और जीव-जंतुओं का अस्तित्व संकट में पड़ता है।

इस समस्या के समाधान के लिए विकास और पर्यावरण में संतुलन आवश्यक है। उद्योगों के अपशिष्ट का उपचार किया जाए, सार्वजनिक परिवहन अपनाया जाए और एकल उपयोग वाले प्लास्टिक से बचा जाए। वृक्षारोपण के साथ पेड़ों की देखभाल भी जरूरी है। कचरे का पृथक्करण और जलस्रोतों की रक्षा नागरिकों की दैनिक आदत बननी चाहिए।

केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं है। सरकार, उद्योग और समाज की संयुक्त जिम्मेदारी से ही प्रदूषण घटेगा। प्रकृति की रक्षा करके हम आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं।

चरण 3: (ख) आदर्श निबंध: भारत के नवयुवक भारत के नवयुवक

युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा और संभावनाओं के वाहक होते हैं। भारत के नवयुवकों में साहस, प्रतिभा और नए विचारों की कमी नहीं है। उनकी सही दिशा में लगी शक्ति देश के सामाजिक और आर्थिक विकास को गति दे सकती है।

आज भारतीय युवा विज्ञान, खेल, कला, उद्यम और तकनीक में अपनी क्षमता दिखा रहे हैं। वे नई समस्याओं के समाधान खोजते हैं और पुरानी रूढ़ियों पर प्रश्न उठाते हैं। फिर भी बेरोजगारी, अवसरों की असमानता, नशे की प्रवृत्ति और दिशाहीन प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियाँ उनके सामने हैं। केवल उपाधि प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं; व्यावहारिक कौशल और नैतिक विवेक भी आवश्यक हैं।

युवाओं को परिश्रम, अनुशासन और सामाजिक संवेदनशीलता अपनानी चाहिए। जाति, धर्म और भाषा के आधार पर घृणा फैलाने वालों से सावधान रहकर उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान करना होगा। शिक्षा के साथ कौशल प्रशिक्षण, खेल और सामुदायिक सेवा को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। सरकार और समाज को समान अवसर तथा उचित मार्गदर्शन उपलब्ध कराना चाहिए।

देश का भविष्य केवल युवाओं के सपनों से नहीं, उनके जिम्मेदार कर्मों से बनेगा। आत्मविश्वास और सेवाभाव से युक्त नवयुवक भारत को अधिक समतामूलक और प्रगतिशील राष्ट्र बना सकते हैं।

चरण 4: (ग) आदर्श निबंध: नारी सशक्तीकरण नारी सशक्तीकरण

नारी सशक्तीकरण का अर्थ महिलाओं को शिक्षा, सम्मान, सुरक्षा और अपने जीवन के निर्णय लेने की स्वतंत्रता देना है। समाज का विकास तभी पूर्ण हो सकता है जब महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर मिलें।

महिलाएँ परिवार, कृषि, शिक्षा, विज्ञान और प्रशासन सहित अनेक क्षेत्रों में योगदान देती हैं। इसके बावजूद कई स्थानों पर उन्हें भेदभाव, हिंसा, अशिक्षा और आर्थिक निर्भरता का सामना करना पड़ता है। घरेलू कार्य का मूल्य अक्सर पहचाना नहीं जाता और निर्णयों में उनकी भागीदारी सीमित रहती है। इन बाधाओं को दूर करना पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

बालिकाओं की शिक्षा सशक्तीकरण की पहली शर्त है। सुरक्षित विद्यालय, कौशल प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर और समान कार्य के लिए समान वेतन आवश्यक हैं। संपत्ति तथा कानूनी अधिकारों की जानकारी भी महिलाओं को स्वतंत्र बनाती है। परिवार में घरेलू जिम्मेदारियाँ साझा की जाएँ और लड़कों को भी समानता तथा सम्मान की शिक्षा दी जाए। कार्यस्थलों पर सुरक्षा और शिकायतों का प्रभावी निवारण सुनिश्चित होना चाहिए।

नारी सशक्तीकरण केवल योजनाओं का विषय नहीं, व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया है। महिलाओं की आवाज को महत्त्व देकर और उन्हें निर्णयों में सहभागी बनाकर ही न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की जा सकती है।

चरण 5: (घ) आदर्श निबंध: विज्ञापन और हम विज्ञापन और हम

विज्ञापन आधुनिक जीवन का परिचित अंग है। समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन और डिजिटल माध्यमों पर हमें वस्तुओं, सेवाओं तथा सार्वजनिक अभियानों की जानकारी मिलती है। विज्ञापन हमारी पसंद और खरीद के निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

विज्ञापनों के अनेक लाभ हैं। वे नए उत्पादों की जानकारी देते हैं, विभिन्न विकल्पों की तुलना में सहायता करते हैं और व्यापार को बढ़ावा देते हैं। स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा से संबंधित जनहित विज्ञापन सामाजिक जागरूकता भी फैलाते हैं। किंतु प्रत्येक विज्ञापन निष्पक्ष सूचना नहीं देता। कुछ विज्ञापन बढ़ा-चढ़ाकर दावे करते हैं और आकर्षक चित्रों या प्रसिद्ध व्यक्तियों के माध्यम से अनावश्यक वस्तुओं की चाह पैदा करते हैं।

उपभोक्ता को जरूरत और इच्छा में अंतर समझना चाहिए। खरीदने से पहले वस्तु की गुणवत्ता, कीमत, उपयोगिता और शर्तों की जाँच जरूरी है। केवल आकर्षक प्रस्तुति को सत्य का प्रमाण नहीं मानना चाहिए। बच्चों को भी विज्ञापनों की व्यावसायिक प्रकृति समझाना आवश्यक है। विज्ञापनदाताओं को भ्रामक दावों और भेदभावपूर्ण चित्रण से बचना चाहिए।

विज्ञापन उपयोगी माध्यम हैं, पर विवेकपूर्ण उपभोग हमारी जिम्मेदारी है। जागरूक उपभोक्ता और उत्तरदायी विज्ञापन व्यवस्था मिलकर बाजार को अधिक विश्वसनीय बना सकते हैं।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों में स्पष्ट भूमिका, संतुलित विवेचन और समाधानपरक निष्कर्ष दिया गया है। परीक्षा में चुने गए विषय का एक ही सुव्यवस्थित निबंध लिखा जाएगा।

त्वरित सुझाव: निबंध लिखने से पहले विषय से जुड़े कारण, प्रभाव और उपाय के दो-दो बिंदु सोचें; इससे अनुच्छेदों में विचारों का दोहराव नहीं होगा।

4. 'प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए।' इसके पक्ष या विपक्ष में तर्क देते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

अथवा — ग्रामीण अंचलों में किसानों की शोचनीय दशा के कारणों का विश्लेषण करते हुए अपने राज्य के कृषि मंत्री को पत्र लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा समापन का क्रम आवश्यक है।
- संपादक को पत्र में सार्वजनिक समस्या पर तर्क और जनहित के सुझाव दिए जाते हैं। मंत्री को पत्र में समस्या के कारणों के साथ संबंधित विभाग से ठोस कार्रवाई का अनुरोध किया जाता है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना पहले पत्र में मातृभाषा के पक्ष में समझ, अभिव्यक्ति और सहभागिता के तर्क दिए जाएँगे तथा अन्य भाषाओं के अध्ययन का समर्थन रखा जाएगा। दूसरे विकल्प में किसानों की दशा के प्राकृतिक, आर्थिक और विपणन संबंधी कारणों का विश्लेषण करके सुधार के उपाय सुझाए जाएँगे। दोनों पत्रों में भाषा विनम्र और संक्षिप्त रहेगी।

चरण 2: पहले विकल्प का पूर्ण पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2016
सेवा में
संपादक महोदय
दैनिक जनवाणी
नई दिल्ली
विषय: प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रखने के संबंध में
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ।
बच्चा घर और परिवेश से अपनी मातृभाषा सीखता है। उसी भाषा में पढ़ाए जाने पर वह अवधारणाओं को सहजता से समझता है तथा प्रश्न पूछने में संकोच नहीं करता। अपरिचित भाषा का अतिरिक्त बोझ घटने से उसका ध्यान विषय समझने पर केंद्रित होता है। वह अपने अनुभवों और कल्पना को अधिक स्वाभाविक ढंग से व्यक्त कर सकता है। अभिभावक भी उसकी पढ़ाई में सहयोग दे सकते हैं।
इसका अर्थ अन्य भाषाओं की उपेक्षा नहीं है। उनका अध्ययन क्रमशः कराया जाए, किंतु शुरुआती अवधारणाओं की नींव परिचित भाषा में रखी जाए। बहुभाषी कक्षाओं में बच्चों की घरेलू भाषाओं का सम्मान करते हुए उपयुक्त सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध कराए जाएँ।
कृपया इस विषय पर जनमत निर्माण के लिए मेरे विचार प्रकाशित करने की कृपा करें।
भवदीय
अमन कुमार

चरण 3: दूसरे विकल्प का पूर्ण पत्र ग्राम रामपुर, जिला सीतापुर
उत्तर प्रदेश
15 मार्च, 2016
सेवा में
माननीय कृषि मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ

विषय: ग्रामीण किसानों की शोचनीय दशा सुधारने हेतु अनुरोध

महोदय,

मैं आपका ध्यान ग्रामीण अंचलों में किसानों की कठिन आर्थिक स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। अन्न पैदा करने वाले अनेक परिवार आज बढ़ती लागत और अनिश्चित आय के कारण संकट में हैं।

छोटी जोतों, सिंचाई की कमी और वर्षा पर निर्भरता से उत्पादन प्रभावित होता है। बीज, खाद, बिजली तथा डीजल महँगे होने से लागत बढ़ती है। संस्थागत ऋण आसानी से न मिलने पर किसान अधिक ब्याज वाले कर्ज में फँस जाते हैं। भंडारण और परिवहन की कमी तथा बिचौलियों पर निर्भरता के कारण उपज का उचित मूल्य भी नहीं मिलता। प्राकृतिक आपदा में नुकसान होने पर सहायता देर से पहुँचती है।

कृपया सस्ती ऋण सुविधा, समय पर गुणवत्तापूर्ण कृषि सामग्री और बेहतर सिंचाई की व्यवस्था कराएँ। गाँवों के निकट भंडारण, पारदर्शी खरीद और समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जाए। फसल बीमा तथा आपदा सहायता का निपटारा शीघ्र हो और कृषि विशेषज्ञ किसानों को स्थानीय जरूरतों के अनुसार मार्गदर्शन दें।

आशा है कि आपका विभाग इन समस्याओं पर तत्काल कार्रवाई करेगा।

भवदीय

अमन कुमार

जागरूक ग्रामीण नागरिक

चरण 4: निष्कर्ष दोनों विकल्पों के पत्रों में निर्धारित औपचारिक प्रारूप, विषयानुकूल तर्क और स्पष्ट अनुरोध शामिल हैं। परीक्षा में चुने हुए एक विकल्प का पत्र लिखा जाएगा।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में जनमत और जागरूकता का आग्रह करें; मंत्री को पत्र में विभाग द्वारा किए जा सकने वाले उपाय स्पष्ट लिखें।

5(क). 'समाचार' क्या है? कोई एक परिभाषा स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का आधार नवीन, सत्यापित और जनरुचि अथवा जनहित से संबंधित घटना की सूचना है। उसकी प्रस्तुति तथ्यपरक होती है।

चरण 1: परिभाषा किसी ताजा घटना, विचार या समस्या की ऐसी सत्यापित और तथ्यपरक सूचना, जिसमें लोगों की रुचि हो या जिसका जनजीवन पर प्रभाव पड़ता हो, समाचार कहलाती है।

चरण 2: परिभाषा का स्पष्टीकरण इस परिभाषा में नवीनता, तथ्य की सत्यता और सार्वजनिक महत्त्व प्रमुख हैं। उदाहरण के लिए, किसी नगर में पेयजल आपूर्ति बाधित होने की ताजा, पुष्ट सूचना समाचार है, क्योंकि वह नागरिकों को प्रभावित करती है। अपुष्ट अफवाह या केवल व्यक्तिगत कल्पना को समाचार नहीं कहा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार नवीन तथा सत्यापित घटना की तथ्यपरक सूचना है, जो जनरुचि या जनहित से जुड़ी होती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में ताजा सूचना, सत्यापन और जनहित अवश्य जोड़ें; समाचार को केवल घटना या अफवाह कहकर न छोड़ें।

5(ख). प्रिंट माध्यम की दो उपयोगिताएँ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम में समाचारपत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें आते हैं। इनमें प्रकाशित सामग्री पाठक को लिखित रूप में मिलती है।

- इस माध्यम की उपयोगिता समझाते समय पाठक की सुविधा और सामग्री के संरक्षण, दोनों का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 1: पढ़ने की सुविधा पाठक मुद्रित सामग्री को अपनी सुविधा, समय और गति के अनुसार पढ़ सकता है। कोई बात समझ में न आए तो उसे दोबारा पढ़कर अर्थ स्पष्ट कर सकता है।

चरण 2: स्थायी संदर्भ समाचारपत्र या पत्रिका की उपयोगी सामग्री सुरक्षित रखी जा सकती है। आवश्यकता पड़ने पर पुराने समाचार, विचार या जानकारी को फिर देखकर संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट माध्यम की दो उपयोगिताएँ हैं—अपनी सुविधा और गति से बार-बार पढ़ सकना तथा सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग करना।

त्वरित सुझाव: दो उपयोगिताएँ लिखते समय एक बिंदु पढ़ने की सुविधा और दूसरा सामग्री के संरक्षण पर रखें।

5(ग). संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादन का उद्देश्य समाचार या लेख को तथ्यपूर्ण, स्पष्ट और पाठक के लिए उपयोगी बनाना है।
- संपादक को समाचार की शुद्धता के साथ उसकी निष्पक्ष प्रस्तुति का भी ध्यान रखना चाहिए।

चरण 1: तथ्यात्मक शुद्धता समाचार में दिए गए नाम, स्थान, तिथि, आँकड़े और घटनाक्रम सही होने चाहिए। प्रकाशन से पहले तथ्यों की जाँच करनी चाहिए, ताकि गलत सूचना पाठकों तक न पहुँचे।

चरण 2: निष्पक्षता समाचार के संबंधित पक्षों को उचित स्थान दिया जाना चाहिए। संपादक को निजी आग्रह, पक्षपात और अप्रमाणित आरोपों से बचकर तथ्य प्रस्तुत करने चाहिए। किसी मत को तथ्य बनाकर प्रस्तुत करना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादन के दो प्रमुख सिद्धांत हैं—तथ्यात्मक शुद्धता और निष्पक्षता। इनके पालन से समाचार विश्वसनीय और संतुलित बनता है।

त्वरित सुझाव: दो सिद्धांतों के नाम स्पष्ट लिखें; शुद्धता के लिए तथ्य-जाँच और निष्पक्षता के लिए पक्षपात से बचने का संकेत दें।

5(घ). 'पीत पत्रकारिता' किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में जनहित, तथ्य और विश्वसनीयता को प्राथमिकता दी जाती है।
- पीत पत्रकारिता में इन मूल्यों की उपेक्षा करके सनसनी और लोकप्रियता को प्रमुख बनाया जाता है।

चरण 1: प्रवृत्ति की पहचान जब समाचारपत्र या अन्य समाचार माध्यम पाठकों को आकर्षित करने के लिए घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर, उत्तेजक या सनसनीखेज ढंग से प्रस्तुत करते हैं, तब समाचार की सच्चाई और जनहित पीछे छूट जाते हैं।

चरण 2: परिभाषा का आधार ऐसी पत्रकारिता में अफवाहों, अपुष्ट आरोपों, चटपटी निजी बातों या विकृत तथ्यों को महत्व दिया जा सकता है। इसका उद्देश्य जिम्मेदार सूचना देने के बजाय सनसनी फैलाकर बिक्री या लोकप्रियता बढ़ाना होता है।

चरण 3: निष्कर्ष तथ्यों और जनहित की उपेक्षा कर समाचारों को सनसनीखेज, बढ़ा-चढ़ाकर या भ्रामक रूप में प्रस्तुत करने वाली पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सनसनी फैलाने की प्रवृत्ति और तथ्य अथवा जनहित की उपेक्षा, दोनों स्पष्ट करें।

5(ङ). रेडियो समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता समाचार को सुनकर समझता है और मुद्रित पाठ की तरह पीछे लौटकर नहीं पढ़ सकता।
- इसलिए रेडियो समाचारों की भाषा में सहजता और तत्काल बोध आवश्यक हैं।

चरण 1: सरल और बोलचाल की भाषा रेडियो समाचारों में प्रचलित तथा आसानी से समझ आने वाले शब्द होने चाहिए। कठिन, दुर्लभ और अत्यधिक अलंकृत शब्द सुनते ही अर्थ समझने में बाधा डालते हैं। सहज भाषा विविध पृष्ठभूमि के श्रोताओं तक समाचार पहुँचाती है।

चरण 2: छोटे और स्पष्ट वाक्य वाक्य संक्षिप्त तथा सीधे होने चाहिए। लंबे और जटिल वाक्यों में श्रोता मुख्य बात खो सकता है। स्पष्ट वाक्यरचना से समाचार का आशय एक बार सुनने पर ही समझ में आ जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो समाचारों की भाषा सरल तथा बोलचाल की होनी चाहिए और उसके वाक्य छोटे, सीधे तथा स्पष्ट होने चाहिए।

त्वरित सुझाव: रेडियो की भाषा की हर विशेषता को सुनकर तुरंत समझ पाने की आवश्यकता से जोड़कर समझाएँ।

---

6. 'नगरों की ओर पलायन' अथवा 'महँगाई का दानव' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय के मानवीय पक्ष, अनुभव और सामाजिक प्रभाव को रोचक तथा संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है।
- आकर्षक शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ, विषय का क्रमिक विस्तार और विचारोत्तेजक समापन फ़ीचर को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: लेखन की रूपरेखा प्रश्न के दोनों वैकल्पिक विषयों के नमूने दिए जा रहे हैं। पहले फ़ीचर में पलायन के कारण, नगरीय जीवन की कठिनाइयाँ और गाँवों में अवसर बढ़ाने की आवश्यकता आएगी। दूसरे में महँगाई का घरेलू जीवन पर प्रभाव, उसके कारण और राहत के उपाय आएँगे। दोनों में मानवीय अनुभव को केंद्र में रखकर विषय विकसित किया गया है।

चरण 2: विकल्प 1 : नगरों की ओर पलायन खाली होते आँगन, भरते नगर

लेखक : एक विद्यार्थी

गाँव की सुबह में आज फिर एक बस धूल उड़ाती चली गई। खिड़की के पास बैठा युवक पीछे छूटते घर को देख रहा था। उसकी आँखों में नौकरी का सपना था और मन में परिवार से दूर होने की कसक। नगरों की ओर पलायन की कहानी ऐसे ही अनगिनत विदा होते चेहरों से बनती है।

खेती की अनिश्चित आय, स्थानीय रोजगार की कमी और बेहतर शिक्षा तथा चिकित्सा की तलाश लोगों को शहर खींचती है। गाँव का युवक मेहनत से नहीं डरता; वह अपनी मेहनत का उचित प्रतिफल चाहता है। शहर की चमक उसे यह विश्वास दिलाती है कि वहाँ अवसरों के द्वार खुले होंगे।

लेकिन महानगर में कदम रखते ही सपने कठिन वास्तविकता से टकराते हैं। महँगा किराया, लंबी यात्राएँ, असुरक्षित रोजगार और भीड़ में अकेलापन उसका स्वागत करते हैं। अनेक श्रमिक छोटे कमरों में रहते हैं और अपनी जरूरतें घटाकर घर पैसे भेजते हैं। उधर गाँव में बुजुर्गों का सहारा कम होता जाता है और आँगनों की चहल-पहल घटती है।

पलायन को केवल रोकने की बात पर्याप्त नहीं। गाँवों में अच्छे विद्यालय, अस्पताल, सिंचाई, छोटे उद्योग और सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराने होंगे। स्थानीय उत्पादों को बाजार और युवाओं को प्रशिक्षण मिले तो बाहर जाना मजबूरी नहीं, चुनाव बन सकेगा। विकास की सच्ची पहचान यही होगी कि किसी को अपने सपने पूरे करने के लिए अपनी जड़ों से विवश होकर दूर न होना पड़े।

चरण 3: विकल्प 2 : महँगाई का दानव थैले का घटता वजन, खर्च का बढ़ता बोझ

लेखक : एक विद्यार्थी

बाजार से लौटती माँ ने सब्जियों का थैला मेज पर रखा और हिसाब की कॉपी खोल ली। पैसे पहले जितने लगे थे, पर थैले में सामान कम

था। घर का यह छोटा-सा दृश्य महँगाई की बड़ी कहानी कह देता है।

दाल, तेल, सब्जी, ईंधन, किराया और पढ़ाई—हर जरूरत परिवार की आय से अपना हिस्सा माँगती है। आय उसी अनुपात में न बढ़े तो घर का बजट बिगड़ने लगता है। कहीं फल खरीदने में कटौती होती है, कहीं बच्चे की कोई जरूरत टाल दी जाती है। सबसे अधिक चोट गरीब और निश्चित आय वाले परिवारों पर पड़ती है, क्योंकि उनकी कमाई का बड़ा भाग आवश्यक वस्तुओं पर ही खर्च होता है।

महँगाई केवल बाजार में टँगे मूल्यपत्रों की बात नहीं है। यह रसोई की चिंता, मजदूर की थकान और बुजुर्ग की दवा तक पहुँचती है। उत्पादन में कमी, परिवहन और ईंधन की बढ़ती लागत, आपूर्ति में बाधाएँ तथा जमाखोरी जैसी स्थितियाँ वस्तुओं के दाम बढ़ा सकती हैं। अफवाह और अनावश्यक खरीद भी संकट को बढ़ाते हैं।

राहत के लिए आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुचारु रखनी होगी, जमाखोरी पर अंकुश लगाना होगा और सार्वजनिक वितरण को प्रभावी बनाना होगा। परिवार भी खरीद की योजना बनाकर और अपव्यय घटाकर कुछ बचत कर सकते हैं। फिर भी पूरा भार उपभोक्ता पर डालना उचित नहीं। ऐसी आर्थिक व्यवस्था आवश्यक है जिसमें मेहनतकश की थाली, बच्चे की पढ़ाई और रोगी की दवा सुरक्षित रहें। विकास तभी सार्थक होगा जब आम आदमी सम्मान से जीवन चला सके।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर में केवल सूचनाएँ गिनाने के बजाय मानवीय दृश्य, सामाजिक कारण और प्रभाव तथा सार्थक समापन को जोड़ा गया है। परीक्षा में चुने हुए किसी एक विषय का पूरा फ़ीचर लिखना चाहिए।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी छोटे मानवीय दृश्य से करें और उसी से व्यापक सामाजिक समस्या की ओर बढ़ें।

7. 'प्रकृति की गोद में एक दिन' अथवा 'योगासन और स्वास्थ्य' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषयानुकूल शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक समापन दिया जाता है।
- विकल्प वाले प्रश्न में दोनों विषयों के नमूने दिए गए हैं। प्रकृति-विषयक आलेख अनुभवपरक और स्वास्थ्य-विषयक आलेख तथ्यपरक रखा गया है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विस्तार पहले आलेख में प्रातःकालीन दृश्य, प्रकृति के बीच बिताए समय, मानसिक ताजगी और पर्यावरण-संरक्षण का क्रम रखा जाएगा। दूसरे में योगासन का परिचय, शारीरिक लाभ, मानसिक संतुलन और नियमित अभ्यास की सावधानियाँ रहेंगी। दोनों में छोटे अनुच्छेद तथा अंत में विषय से जुड़ा संदेश आवश्यक है।

चरण 2: पहले विषय पर पूर्ण आलेख प्रकृति की गोद में एक दिन

लेखक: अजय कुमार

पिछले रविवार को मुझे नगर के कोलाहल से दूर नदी किनारे जाने का अवसर मिला। भोर की हल्की ठंडक, घास पर चमकती ओस और पक्षियों की चहचहाहट ने मेरा स्वागत किया। ऐसा लगा मानो प्रकृति स्वयं अपना द्वार खोलकर मुझे भीतर बुला रही हो।

नदी के स्वच्छ जल में उगते सूर्य का प्रतिबिंब झिलमिला रहा था। किनारे खड़े पेड़ों से छनकर आती धूप मन को सुख दे रही थी। मैंने धीरे-धीरे चलकर आसपास के पौधों और फूलों को देखा। दिन भर की भागदौड़ में जिन छोटी सुंदरताओं को हम अनदेखा कर देते हैं, वे उस सुबह मेरे लिए आनंद का स्रोत बन गईं।

दोपहर में एक वृक्ष की छाया में बैठकर भोजन किया। हवा की सरसराहट और पानी की मृदुल ध्वनि के बीच किसी कृत्रिम मनोरंजन की आवश्यकता नहीं थी। वहाँ कुछ लोगों द्वारा छोड़ा गया प्लास्टिक देखकर दुःख भी हुआ। साथियों के साथ हमने आसपास का कूड़ा एकत्र किया और उचित स्थान पर डाल दिया।

संध्या को लौटते समय शरीर थका था, लेकिन मन नई ऊर्जा से भर गया था। उस दिन समझ आया कि प्रकृति केवल दृश्य-सौंदर्य नहीं, हमारे जीवन का आधार है। उसकी गोद में सच्चा सुख तभी मिलेगा, जब हम उसकी स्वच्छता और हरियाली की रक्षा भी करेंगे।

चरण 3: दूसरे विषय पर पूर्ण आलेख योगासन और स्वास्थ्य

लेखक: अजय कुमार

स्वस्थ जीवन के लिए शरीर और मन दोनों का संतुलित रहना आवश्यक है। आज की व्यस्त दिनचर्या में लंबे समय तक बैठना, अनियमित भोजन और तनाव सामान्य समस्याएँ बन गए हैं। ऐसी स्थिति में योगासन जीवन को व्यवस्थित और सक्रिय बनाने में सहायक हो सकते हैं।

योगासन शरीर को अलग-अलग स्थितियों में सहजता से रखने का अभ्यास है। नियमित अभ्यास से लचीलापन, शारीरिक संतुलन और मांसपेशियों की कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता मिलती है। ताड़ासन जैसे सरल आसन से शरीर की स्थिति पर ध्यान जाता है। कठिन अभ्यास से पहले अपनी क्षमता समझना आवश्यक है।

योग का लाभ केवल शरीर तक सीमित नहीं है। आसन करते समय श्वास और शरीर की गति पर एकाग्र होने से मन को स्थिरता मिलती है। नियमित अभ्यास अनुशासन और धैर्य विकसित करता है। विद्यार्थियों के लिए यह पढ़ाई तथा विश्राम के बीच उपयोगी संतुलन बनाने का अवसर भी है।

अभ्यास स्वच्छ, हवादार स्थान पर प्रशिक्षित मार्गदर्शक की सहायता से करना चाहिए। शरीर को झटके देना या दर्द सहकर आसन करना उचित नहीं है। किसी बीमारी अथवा विशेष शारीरिक स्थिति में चिकित्सकीय सलाह आवश्यक है। योगासन दवा का विकल्प समझने के बजाय स्वस्थ दिनचर्या का अंग बनाए जाने चाहिए।

संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद और नियमित योगाभ्यास मिलकर स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। इसलिए थोड़े समय के दिखावटी प्रयास के स्थान पर सहज, सुरक्षित और निरंतर अभ्यास अपनाना अधिक उपयोगी है।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों विषयों में उपयुक्त शीर्षक, लेखक का नाम, क्रमबद्ध अनुच्छेद और विचारपूर्ण समापन के साथ आलेख प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: आलेख लिखते समय पहले तीन मुख्य बिंदु तय करें; फिर भूमिका और समापन को उन्हीं बिंदुओं से जोड़ें।

---

8. जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू।
पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।
सुत बित नारि भवन परिवारा।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता।
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।
जौं जड़ दैव जिआवै मोही।। [8 अंक]

8(क). राम पिता का वचन नहीं मानें – क्या यह संभव था? फिर वे ऐसा क्यों कह रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम के कथन को उनके चरित्र और लक्ष्मण-वियोग की तात्कालिक मनःस्थिति के संदर्भ में समझना चाहिए।
- शोक की चरम अवस्था में निकला कथन भावावेग व्यक्त करता है; वह हमेशा स्थिर निर्णय नहीं होता।

चरण 1: राम का स्वभाव और मर्यादा राम पिता के वचन का सम्मान करने वाले, कर्तव्यनिष्ठ और मर्यादापालक हैं। उन्होंने राजसुख छोड़कर वनवास स्वीकार किया था। इसलिए सामान्य स्थिति में उनके द्वारा पिता की आज्ञा न मानना संभव नहीं लगता। यह पंक्ति उनके आज्ञाकारी स्वभाव को बदल नहीं देती।

चरण 2: विलाप में कथन का कारण लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम को भाई के सदा के लिए बिछुड़ जाने की आशंका होती है। इसी असह्य दुःख में वे कहते हैं कि यदि पहले जानते कि वन में भाई का वियोग होगा, तो पिता का वह वचन नहीं मानते। यह कथन गहरे भ्रातृप्रेम, विवशता और शोक का उद्गार है। लक्ष्मण के प्रति उनका लगाव उस क्षण सभी अन्य विचारों पर भारी पड़ रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता की आज्ञा का उल्लंघन राम के स्वभाव के अनुकूल नहीं था; वे लक्ष्मण-वियोग की आशंका से व्याकुल होकर भावावेग में ऐसा कह रहे हैं।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में चरित्र की स्थायी विशेषता और शोक में व्यक्त तात्कालिक भाव को अलग-अलग स्पष्ट करें।

8(ख). काव्यांश के आधार पर तुलसीदास के नारी विषयक विचार पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टिप्पणी का आधार प्रस्तुत पंक्तियाँ हैं; एक प्रसंग से कवि के सभी विचारों का व्यापक निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।
- राम के विलाप में सहोदर भाई की अनुपम महत्ता बताने के लिए अन्य सांसारिक संबंधों से तुलना की गई है।

चरण 1: पंक्तियों में नारी का स्थान काव्यांश में पुत्र, धन, नारी, घर और परिवार को ऐसी उपलब्धियों के रूप में गिनाया गया है जो जीवन में फिर मिल सकती हैं। नारी को यहाँ अन्य सांसारिक संबंधों और साधनों के साथ रखकर उसके स्थानापन्न होने की धारणा व्यक्त हुई है। इसमें तत्कालीन पुरुषप्रधान सामाजिक दृष्टि दिखाई देती है।

चरण 2: प्रसंग की सीमा में टिप्पणी इस कथन में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की अपेक्षा पुरुष के जीवन में उसकी संबंधगत भूमिका प्रमुख है। इस कारण आधुनिक समानतामूलक दृष्टि से यह विचार सीमित लगता है। साथ ही, यहाँ प्रसंग राम के भ्रातृवियोग का है: वे सहोदर की अपूरणीयता उभार रहे हैं। अतः इस भावावेगपूर्ण तुलना को पूरे नारी-जीवन का अंतिम मूल्यांकन मानना उचित नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में नारी को पुनः प्राप्त हो सकने वाले सांसारिक संबंध के रूप में देखा गया है, जो पुरुषप्रधान दृष्टि का संकेत है; इसका तात्कालिक उद्देश्य सहोदर भाई की अपूरणीयता बताना है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में पहले संबंधित पंक्ति का आशय लिखें, फिर उसकी सामाजिक दृष्टि और प्रसंग की सीमा बताएँ।

8(ग). पक्षी और हाथी का उदाहरण क्यों दिया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा परिचित दृश्य से किसी अनुभूति को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाती है।
- यहाँ पक्षी के पंख और हाथी की सूँड़ उसके सामर्थ्य तथा सहज जीवन के आवश्यक आधार हैं।

चरण 1: उदाहरणों का अर्थ पंखों के बिना पक्षी उड़ नहीं सकता और अत्यंत दीन हो जाता है। इसी प्रकार सूँड़ के बिना हाथी अपनी स्वाभाविक शक्ति तथा अनेक आवश्यक क्रियाओं के साधन से वंचित हो जाता है। कवि ने दोनों की ऐसी अवस्था चुनी है जिसमें उनका जीवन असहाय और अपूर्ण दिखाई दे।

चरण 2: राम की स्थिति से संबंध राम कहते हैं कि लक्ष्मण के बिना उनका जीवन भी वैसा ही दीन और असहाय हो जाएगा। लक्ष्मण केवल उनके साथ चलने वाले व्यक्ति नहीं, आत्मीय सहचर और जीवन के बड़े सहारे हैं। पक्षी और हाथी के उदाहरण उनके बिना होने वाली क्षति को मूर्त करते हैं। इनसे राम का गहरा भाईचारा, शोक और भावनात्मक निर्भरता प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंखहीन पक्षी और सूँड़विहीन हाथी की असहायता द्वारा लक्ष्मण के बिना राम के जीवन की दीनता, अपूर्णता और सहाराहीन अवस्था व्यक्त की गई है।

त्वरित सुझाव: उपमा के प्रश्न में पहले उदाहरण की विशेषता बताएँ, फिर वही विशेषता पात्र की स्थिति से जोड़ें।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में पंक्ति का सरल अर्थ और प्रसंग में उसका संकेत दोनों स्पष्ट किए जाते हैं।
- सहोदर का अर्थ एक ही माता से जन्मा भाई है; पंक्ति में उसकी अनुपम आत्मीयता उभारी गई है।

चरण 1: पंक्ति का सरल अर्थ मिलइ न जगत सहोदर भ्राता का आशय है कि संसार में खोए हुए सहोदर भाई का स्थान लेने वाला वैसा ही भाई फिर नहीं मिल सकता। अन्य वस्तुओं अथवा संबंधों की प्राप्ति संभव हो सकती है, पर बचपन से जुड़ा यह आत्मीय संबंध अपने विशिष्ट रूप में अपूरणीय है।

चरण 2: विलाप के संदर्भ में आशय मूर्च्छित लक्ष्मण को संबोधित करते हुए राम उन्हें जागने के लिए पुकारते हैं। वे बताते हैं कि पुत्र, धन, पत्नी, घर और परिवार फिर मिल सकते हैं, किंतु उनके समान सहोदर नहीं मिल सकता। यहाँ भाई के प्रति असाधारण प्रेम और संभावित वियोग की पीड़ा व्यक्त है। राम के लिए लक्ष्मण की क्षति किसी अन्य प्राप्ति से पूरी नहीं हो सकती; इसीलिए वे उन्हें जीवन में लौट आने की करुण पुकार करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम का आशय है कि लक्ष्मण जैसे आत्मीय सहोदर भाई का स्थान कोई नहीं ले सकता; उनका वियोग अपूरणीय होगा।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय कठिन शब्द का अर्थ देकर उसे राम की लक्ष्मण के प्रति करुण पुकार से जोड़ें।

अथवा

8. जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है! [8 अंक]

8(क). किसके रिश्ते को कवि समझ नहीं पा रहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि और प्रिय का आत्मीय संबंध। कवि अपने और अपने प्रिय के बीच के गहरे आत्मीय रिश्ते को पूरी तरह समझ नहीं पा रहा है। उसे अनुभव होता है कि प्रिय के प्रति उसका स्नेह निरंतर बढ़ता रहता है।

चरण 1: रिश्ते की पहचान काव्यांश में कवि अपने प्रिय को संबोधित करता है। आरंभ की पंक्ति 'जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है' इस बात को प्रकट करती है कि संबंध का प्रभाव स्पष्ट है, लेकिन उसके स्वरूप को किसी सामान्य नाम में बाँधना कठिन है। यह प्रिय के प्रति गहरे प्रेम और आत्मीयता का संबंध है।

चरण 2: उलझन का कारण कवि जितना स्नेह हृदय से उँड़ेलता है, उतना ही उसका हृदय फिर भर जाता है। प्रेम देने से घटने के स्थान पर और बढ़ता है। इसी अनंतता और निरंतर नवीनीकरण का रहस्य वह नहीं समझ पाता। इसलिए उसकी जिज्ञासा संबंध के अभाव से नहीं, उसकी असाधारण गहराई से उत्पन्न होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने और प्रिय के अनंत स्नेहमय रिश्ते को नहीं समझ पाता, क्योंकि प्रेम उँड़ेलने पर भी उसका हृदय बार-बार उसी प्रेम से भर जाता है।

त्वरित सुझाव: पहले रिश्ते के दोनों पक्ष लिखें, फिर 'जितना भी उँड़ेलता हूँ' से उसके रहस्य का कारण जोड़ें।

8(ख). कवि को क्यों लगता है कि दिल में कोई झरना है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- झरने के बिंब द्वारा अक्षय प्रेम। दिल के झरने का बिंब प्रेम की निरंतरता और अक्षयता को व्यक्त करता है। मीठा पानी इस प्रेम की मधुरता और जीवनदायी प्रभाव का सूचक है।

चरण 1: झरने की विशेषता झरने अथवा सोते से जल लगातार निकलता रहता है। इसी प्रकार कवि के हृदय से प्रिय के लिए प्रेम उमड़ता रहता है। 'मीठे पानी का सोता' कहकर कवि इस भावना की कोमलता और मधुरता भी स्पष्ट करता है। यहाँ वास्तविक जलस्रोत का वर्णन नहीं, आंतरिक भाव का चित्रण है।

चरण 2: हृदय से उसका संबंध कवि जितना प्रेम बाहर प्रकट करता है, हृदय उतना ही फिर भर जाता है। यह प्रेम सहज और स्वाभाविक है। प्रेम की धारा रुकती नहीं और उसका भंडार समाप्त नहीं होता। इसी अनुभव के कारण उसे लगता है कि हृदय में कोई झरना है, जो प्रिय के प्रति स्नेह को निरंतर नया करता रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि को दिल में झरना इसलिए लगता है कि उसका प्रेम कभी समाप्त नहीं होता; उसे जितना उँड़ेलता है, उतना ही फिर उमड़ आता है।

त्वरित सुझाव: झरने की निरंतर जलधारा और हृदय के बार-बार प्रेम से भरने के बीच समानता अवश्य दिखाएँ।

8(ग). 'भीतर वह, ऊपर तुम' – 'वह' और 'तुम' कौन हैं? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनामों का संदर्भ और प्रिय का प्रभाव। काव्यांश के सर्वनामों का अर्थ उनके ठीक पहले और बाद के बिंबों से खुलता है। 'वह' का संदर्भ भीतरी प्रेम-स्रोत तथा 'तुम' का संदर्भ संबोधित प्रिय से है।

चरण 1: भीतर वह का अर्थ 'वह' कवि के दिल में स्थित मीठे पानी के सोते अर्थात् अक्षय स्नेह और प्रेम के झरने की ओर संकेत करता है। यह कवि की भीतरी अनुभूति है। प्रिय के प्रति उमड़ता प्रेम उसके अंतर्मन को भरता है और व्यक्त हो जाने पर भी बार-बार नया होकर लौटता है।

चरण 2: ऊपर तुम का अर्थ 'तुम' कवि का प्रिय है, जिसकी स्नेहमयी छवि और प्रभाव उसके जीवन पर छाए हुए हैं। अगले बिंब में प्रिय के मुसकराते चेहरे की तुलना चाँद से की गई है। इस प्रकार भीतर प्रेम की धारा है और ऊपर अथवा बाहर प्रिय का स्नेहमय व्यक्तित्व है; दोनों ओर कवि प्रिय के प्रभाव से घिरा है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वह' हृदय के भीतर बहता प्रेम का मीठा सोता है और 'तुम' कवि का प्रिय है, जिसकी स्नेहमयी छवि उसके जीवन पर छाई है।

त्वरित सुझाव: 'वह' को पिछली पंक्ति के सोते से और 'तुम' को अगली पंक्तियों के प्रिय के चेहरे से जोड़कर पढ़ें।

8(घ). मुसकराते चाँद वाली कल्पना को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चाँद और प्रिय के चेहरे का साम्य। मुसकराते चाँद का बिंब प्रिय की स्नेहमयी उपस्थिति को मूर्त बनाता है। चाँद की शीतल उज्ज्वल छवि और प्रिय का प्रसन्न चेहरा एक-दूसरे के समान रखे गए हैं।

चरण 1: प्रकृति का चित्र कवि चाँद को ऐसा देखता है मानो वह रात-भर धरती पर मुसकरा रहा हो। उसकी चाँदनी धरती पर फैलती है और वातावरण को शीतल तथा उज्ज्वल करती है। यह कल्पना प्रकृति को आत्मीय बनाती है तथा चाँद की कोमलता को एक मुसकराते चेहरे की परिचित छवि देती है।

चरण 2: प्रिय से तुलना जैसे चाँद का प्रकाश धरती पर बना रहता है, वैसे ही प्रिय का खिलता चेहरा कवि की चेतना पर छाया रहता है। प्रिय की स्मृति और स्नेह उसे शांति, प्रसन्नता तथा आत्मीयता देते हैं। 'ज्यों' और 'त्यों' से दोनों दृश्यों का साम्य स्पष्ट होता है; कल्पना प्रेम के निरंतर प्रभाव को उजागर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष रात-भर धरती पर मुसकराते चाँद की तरह प्रिय का प्रसन्न चेहरा कवि के जीवन पर छाया रहता है और उसे शीतलता तथा आनंद देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चाँद-धरती और प्रिय-कवि के दोनों संबंध दिखाएँ, तभी तुलना का पूरा आशय स्पष्ट होगा।

---

9. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिल-खिलाते बच्चे की हँसी। [6 अंक]

9(क). काव्यांश के वात्सल्य भाव को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वात्सल्य भाव संतान के प्रति माता के सहज स्नेह, ममता और आनंद की अभिव्यक्ति है। इस रुबाई में कवि फ़िराक़ गोरखपुरी ने माँ और शिशु की आत्मीय क्रीड़ा का चित्र खींचा है।
- भाव स्पष्ट करने के लिए माँ की क्रियाओं और बच्चे की प्रतिक्रिया को एक साथ देखना चाहिए। गोद में भरना, झुलाना और उछालना मातृस्नेह को मूर्त बनाते हैं।

चरण 1: माँ की ममता का चित्र माँ आँगन में अपने सुंदर, प्यारे शिशु को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे हाथों पर झुलाती है और रह-रहकर हवा में हलके से उछालती है। इन स्वाभाविक क्रियाओं में बच्चे को प्रसन्न करने की उसकी इच्छा और उसके प्रति उमड़ता दुलार दिखाई देता है। शिशु को 'चाँद का टुकड़ा' कहना उसकी सुंदरता के साथ माँ के लिए उसके अत्यंत प्रिय होने का भी संकेत है।

चरण 2: शिशु की हँसी में स्नेह की परिणति माँ के उछालने पर बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ता है और उसकी हँसी से आँगन गूँज उठता है। यह हँसी बताती है कि माँ की गोद और उसके स्नेहिल स्पर्श में बच्चा आनंद अनुभव करता है। इस प्रकार माँ का दुलार और बच्चे की निश्छल प्रसन्नता मिलकर घरेलू जीवन के सरल दृश्य को वात्सल्य से भर देते हैं। भाव का आधार माँ की क्रीड़ा और उससे उपजा शिशु का आनंद है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में माँ का बच्चे को गोद में भरकर झुलाना और हवा में उछालना उसके ममतामय हृदय को प्रकट करता है। बच्चे की खिलखिलाती हँसी उस स्नेह का प्रत्युत्तर है। माँ और संतान का यही आत्मीय, आनंदपूर्ण संबंध काव्यांश के वात्सल्य भाव को साकार करता है।

त्वरित सुझाव: वात्सल्य स्पष्ट करते समय माँ की दो क्रियाएँ और बच्चे की हँसी का उल्लेख करके उन्हें ममता तथा आनंद से जोड़ें।

9(ख). 'चाँद के टुकड़े को' – अलंकार सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; दोनों के बीच 'जैसा' अथवा 'समान' जैसा तुलनासूचक शब्द नहीं रहता।
- काव्य में चाँद का प्रयोग सुंदरता, कोमलता और प्रियता का बोध कराने के लिए होता है। यहाँ यह बिंब बच्चे के प्रति माँ का स्नेह उभारता है।

चरण 1: उपमेय और उपमान पहचानना 'चाँद के टुकड़े को' में उपमेय माँ की गोद में लिया हुआ बच्चा है और उपमान चाँद का टुकड़ा है। आगे बच्चे की खिलखिलाहट का उल्लेख स्पष्ट करता है कि माँ किसी वास्तविक चाँद के टुकड़े को नहीं, अपने शिशु को झुला रही है। कवि ने बच्चे को सीधे चाँद का टुकड़ा कहा है।

चरण 2: अलंकार और उसका प्रभाव स्पष्ट करना बच्चे और चाँद के टुकड़े के बीच अभेद स्थापित होने के कारण यहाँ रूपक अलंकार है। इससे बच्चे का सुंदर, कोमल और मनमोहक रूप सजीव हो उठता है। माँ की दृष्टि में उसका शिशु अत्यंत प्रिय है; चाँद का बिंब इसी वात्सल्य को आकर्षक और प्रभावपूर्ण बनाता है। 'जैसा' शब्द न होने और सीधे आरोप के कारण इसे उपमा नहीं कहेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष 'चाँद के टुकड़े को' में रूपक अलंकार है। बच्चे पर चाँद के टुकड़े का आरोप करके उसके सौंदर्य और माँ के वात्सल्य को व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले बच्चे को उपमेय और चाँद के टुकड़े को उपमान बताइए, फिर सीधे आरोप के आधार पर रूपक और उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय काव्यांश के शब्दों से प्रमाण देना चाहिए। सरल शब्दावली, लोकप्रयोग और ध्वनि-सौंदर्य भाषा को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।
- इस काव्यांश में माँ और बच्चे का घरेलू दृश्य है; उसकी सहज भाषा वात्सल्य के अनुभव को पाठक के निकट लाती है।

चरण 1: सरल और लोकजीवन से जुड़ी भाषा पहली विशेषता सरल, सहज तथा बोलचाल के निकट भाषा है। 'आँगन', 'हाथों', 'गोद' और 'बच्चे' जैसे परिचित शब्द घरेलू वातावरण बनाते हैं। 'लोका देती है' जैसा लोकप्रचलित प्रयोग बच्चे को हवा में उछालकर खिलाने की क्रिया को स्वाभाविक रूप से सामने रखता है। शब्दावली में बनावटी कठिनाई नहीं है।

चरण 2: लयात्मक और ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति दूसरी विशेषता भाषा का लयपूर्ण तथा ध्वन्यात्मक होना है। 'रह-रह' की पुनरावृत्ति माँ की बार-बार होने वाली क्रिया का आभास देती है और 'खिल-खिलाते' में बच्चे की हँसी सुनाई पड़ती है। 'खड़ी' और 'भरी' जैसे तुकांत शब्द भी प्रवाह बढ़ाते हैं। इस प्रकार शब्द केवल दृश्य नहीं बताते, उसके भीतर की गति और आनंद को भी अनुभव कराते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ हैं—लोकप्रयोगों से युक्त सरल बोलचाल की भाषा और पुनरावृत्ति तथा ध्वन्यात्मक शब्दों से बनी लयात्मकता। 'लोका देती है' तथा 'खिल-खिलाते' इनके उपयुक्त उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ काव्यांश का एक शब्द अवश्य जोड़िए; केवल 'सरल' या 'सुंदर' लिखकर उत्तर अधूरा न छोड़िए।

अथवा

9. सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए। [6 अंक]

9(क). खरगोश की आँखों से किसकी तुलना की गई है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में रंग-साम्य। उपमा में दो अलग वस्तुओं की किसी समान विशेषता के आधार पर तुलना होती है। इस काव्यांश में खरगोश की आँखें और सुबह की लालिमा इसी प्रकार जुड़ी हैं।

चरण 1: तुलना के पक्ष कवि ने शरद ऋतु के लाल सवेरे की तुलना खरगोश की आँखों से की है। 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' में सवेरा वर्णन का विषय है और खरगोश की आँखें उसे समझाने वाला परिचित चित्र हैं। 'जैसा' शब्द तुलना को प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करता है।

चरण 2: समानता का आधार खरगोश की आँखों का लाल रंग और उगते सूर्य से लाल दिखाई देने वाला सवेरा समान हैं। इस रंग-साम्य से सुबह की चमक और ताजगी का सजीव दृश्य उभरता है। कवि केवल सुबह होने की सूचना नहीं देता, बल्कि एक ऐसे परिचित प्राकृतिक बिंब से उसे दिखाता है जिसे पाठक आसानी से अनुभव कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष खरगोश की आँखों से लाल सवेरे की तुलना की गई है, क्योंकि दोनों में लालिमा की समानता है। इस उपमा से प्रातःकाल का दृश्य सजीव बनता है।

त्वरित सुझाव: 'जैसा' के दोनों ओर के पद पहचानें और तुलना का साझा गुण लालिमा साफ-साफ लिखें।

9(ख). काव्यांश के मानवीकरण को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शरद ऋतु का मानवीकरण। जब प्रकृति या अमानवीय सत्ता को मनुष्य की क्रियाएँ और व्यवहार दिए जाते हैं, तब मानवीकरण होता है। यहाँ ऋतु को गतिशील मानव रूप में देखा गया है।

चरण 1: मानव क्रियाओं की पहचान शरद के लिए 'पुलों को पार करते हुए' और 'अपनी नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए' जैसी क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हैं। पुल पार करना तथा साइकिल चलाना मनुष्य के कार्य हैं। ऋतु स्वयं इन कार्यों को वास्तविक रूप में नहीं करती, पर कवि ने उन्हें शरद से जोड़ दिया है।

चरण 2: काव्यगत प्रभाव शरद को नई चमकीली साइकिल पर तेजी से आता हुआ मनुष्य, विशेषत: उत्साही बालक जैसा रूप मिलता है। इससे ऋतु के आगमन की गति, उमंग और नवीनता उभरती है। सुबह तथा मौसम का निर्जीव विवरण एक चंचल, सजीव दृश्य में बदल जाता है; यही मानवीकरण का सौंदर्य है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने शरद ऋतु को पुल पार करते और नई चमकीली साइकिल तेज चलाते मनुष्य के रूप में दिखाया है। मानवीय क्रियाओं का ऋतु पर आरोप ही यहाँ मानवीकरण है।

त्वरित सुझाव: अलंकार बताने के साथ शरद को दी गई दोनों मानवीय क्रियाएँ उद्धृत करें और उनका प्रभाव समझाएँ।

9(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की चित्रात्मकता और सहजता। भाषा की विशेषता बताने पर काव्यांश से उसका उदाहरण देना आवश्यक है। यहाँ परिचित शब्दावली और दृश्य उपस्थित करने वाले बिंब विशेष रूप से ध्यान खींचते हैं।

चरण 1: सरल और सहज भाषा काव्यांश की भाषा सरल, सहज तथा बोलचाल के निकट खड़ी बोली है। 'सवेरा', 'आँखों', 'पुलों' और 'साइकिल' जैसे परिचित शब्द सहज रूप से अर्थ संप्रेषित करते हैं। छोटे वाक्य तथा स्वाभाविक क्रियापद पाठक को ऋतु के आगमन की घटना से सीधे जोड़ते हैं; अर्थ समझने के लिए कठिन शब्दावली की जरूरत नहीं पड़ती।

चरण 2: चित्रात्मक और बिंबात्मक भाषा भाषा दृश्यात्मक है। 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' लालिमा का स्पष्ट चित्र उभारता है और 'नई चमकीली साइकिल' शरद के तेज, उमंगभरे आगमन को आँखों के सामने रखती है। उपमा तथा मानवीकरण इन चित्रों को सजीव बनाते हैं। इसलिए पाठक मौसम को केवल विचार के रूप में नहीं, एक गतिशील दृश्य के रूप में अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष दो विशेषताएँ हैं: सरल, सहज बोलचाल की खड़ी बोली तथा चित्रात्मक-बिंबात्मक अभिव्यक्ति। परिचित शब्द पहली और लाल सवेरे तथा चमकीली साइकिल के चित्र दूसरी विशेषता को पुष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: दो अलग विशेषताएँ चुनें और प्रत्येक के साथ इसी काव्यांश का एक शब्द या बिंब उदाहरण में दें।

10(क). 'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के व्यक्तित्व में संसार के प्रति संवेदना तथा अपनी स्वतंत्र जीवन-दृष्टि साथ-साथ विद्यमान हैं।
- विरोधी भावों का अर्थ असंगति नहीं, बल्कि जीवन की जटिल अनुभूतियों का एक साथ स्वीकार है।

चरण 1: संसार से संबंध और स्वतंत्रता कवि जगत के सुख-दुख से अछूता नहीं है। वह जग-जीवन का भार लेकर चलता है, फिर भी अपने हृदय में प्रेम का संगीत सँजोए रखता है। संसार के प्रति उत्तरदायित्व उसके निजी आनंद को समाप्त नहीं करता। इसी प्रकार वह संसार का ध्यान भी रखता है और उसकी रूढ़ अपेक्षाओं की परवाह किए बिना अपने मन का गान भी करता है।

चरण 2: दुख और उल्लास का मेल कवि के जीवन में वेदना है, किंतु वह उसे निराशा का कारण बनाकर चुप नहीं होता। उसके शीतल वचनों के भीतर दाह है; रोदन भी उसके गीत में राग बन जाता है। वह एक ओर स्वयं को मिटाने वाली मस्ती रखता है और दूसरी ओर कुछ रचने का प्रयत्न करता है। बाहर का उल्लास और भीतर की पीड़ा उसके काव्य में साथ दिखाई देते हैं। कवि का यह आत्मपरिचय किसी एक सरल विशेषण में नहीं समाता। वह बाहरी संसार और भीतरी अनुभूति, दोनों की सच्चाई स्वीकार करता है। उसकी मस्ती में वेदना और उसकी वेदना में गीत का स्वर है; यही विरोधी भाव उसके व्यक्तित्व को समग्र बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जगत का भार और प्रेम, संसार से जुड़ाव और अपनी स्वतंत्रता, शीतल वाणी और अंतर्दाह तथा रोदन और संगीत जैसे विरोधी भावों का सामंजस्य किया है। वह दुख को भी सृजन और जीवन-आनंद में बदल देता है।

त्वरित सुझाव: विरोधी भाव बताते समय दोनों पक्ष लिखें और स्पष्ट करें कि कवि उन्हें अपने जीवन में कैसे साथ लेकर चलता है।

10(ख). 'कविता के बहाने' उसकी उड़ान और उसके खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में चिड़िया और फूल के माध्यम से कविता की व्यापकता समझाई गई है।
- उड़ान कल्पना के विस्तार का तथा खिलना सौंदर्य और संवेदना के प्रसार का प्रतीक है।

चरण 1: कविता की उड़ान का आशय चिड़िया आकाश में उड़ती है, किंतु उसकी उड़ान की भौतिक सीमाएँ होती हैं। कविता की उड़ान कवि की कल्पना और मनुष्य की संवेदना की उड़ान है। वह घर, स्थान और समय की सीमाएँ पार करके विभिन्न अनुभवों, विचारों और मनुष्यों तक पहुँच सकती है। इसलिए कविता की उड़ान को केवल चिड़िया की उड़ान से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता।

चरण 2: कविता के खिलने का आशय फूल का खिलना रंग, सौंदर्य और सुगंध का प्रसार है, पर उसका जीवन सीमित होता है। कविता भी पाठक के मन में सौंदर्य, आनंद और नई अनुभूतियाँ जगाती है। उसका यह खिलना फूल की तरह किसी एक स्थान या अल्प अवधि तक सीमित नहीं है। वह अलग-अलग समय में नए पाठकों के मन में अर्थ और संवेदना के रूप में बार-बार खिलती रहती है। इन बिंबों में प्रकृति कविता की व्यापकता समझाने का माध्यम है। कविता किसी एक दृश्य की नकल भर नहीं करती; वह अनुभव को ऐसे अर्थ देती है जिसे दूसरे लोग भी अपने जीवन से जोड़ सकें। इसलिए उसकी सृजनात्मक पहुँच प्राकृतिक बिंबों की सीमा से आगे जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता की उड़ान से कल्पना और भावों के असीम विस्तार का तथा उसके खिलने से सौंदर्य, आनंद और संवेदना के देश-काल से परे प्रसार का आशय है। चिड़िया और फूल सीमित हैं, जबकि कविता की संभावनाएँ व्यापक हैं।

त्वरित सुझाव: उड़ान को कल्पना और खिलने को संवेदना के प्रसार से जोड़ें; चिड़िया और फूल की सीमाओं का अंतर भी बताएँ।

10(ग). 'बादल राग' के आधार पर लिखिए कि वज्र गर्जन से कौन त्रस्त होते हैं और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के यहाँ बादल की गर्जना सामाजिक परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक बनती है।
- कविता में संपन्न शोषक वर्ग और पीड़ित जन के प्रति बादल के प्रभाव में अंतर है।

चरण 1: त्रस्त होने वाले वर्ग की पहचान वज्र गर्जन से धनवान और शोषक वर्ग के लोग त्रस्त होते हैं। कविता के विशाल शरीर वाले ऊँचे जन तथा अट्टालिकाओं में रहने वाले संपन्न लोग इसी वर्ग का संकेत करते हैं। वे सुख-सुविधाओं और वैभव के बीच रहते हैं, किंतु बादल की भयंकर गर्जना सुनकर भयभीत होकर काँपने लगते हैं। उनके मन की असुरक्षा इस भय में प्रकट होती है।

चरण 2: उनके भय का कारण बादल की गर्जना क्रांति की चेतावनी है। शोषकों को लगता है कि परिवर्तन की आँधी उनके संचित धन, सत्ता और विशेषाधिकार को नष्ट कर देगी। उनका वैभव जिस अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर टिका है, उसके टूटने का डर उन्हें सताता है। इसके विपरीत छोटे पौधे और विप्लव की आशा करने वाला कृषक बादल का स्वागत करते हैं, क्योंकि उन्हें उससे जीवन और मुक्ति की संभावना दिखाई देती है। इस प्रकार गर्जन का भय केवल प्राकृतिक विपत्ति का भय नहीं है। यह उस वर्ग की मानसिकता खोलता है जो अपने सुख को बचाने के लिए सामाजिक विषमता को बनाए रखना चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष वज्र गर्जन से संपन्न शोषक वर्ग त्रस्त होता है, क्योंकि उसे क्रांति द्वारा अपने धन, सत्ता और शोषण पर आधारित व्यवस्था के नष्ट हो जाने का भय है। बादल पीड़ित जनता के लिए आशा और शोषकों के लिए संकट का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल बिजली का भौतिक डर न लिखें; बादल की गर्जना के क्रांतिकारी अर्थ को संपन्न वर्ग के भय से जोड़ें।

11. जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। [8 अंक]

11(क). भक्तिन का समृद्धि सूचक नाम क्या था? वह उसे बताना क्यों नहीं चाहती? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में समृद्धि-सूचक नाम और अभावपूर्ण जीवन के अंतर को समझना आवश्यक है।
- उत्तर का आधार भक्तिन द्वारा अपना नाम छिपाने और लेखिका से उसका उपयोग न करने की प्रार्थना है।

चरण 1: नाम का अर्थ बताएँ भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है। लक्ष्मी धन और समृद्धि की सूचक मानी जाती हैं। इसलिए उसके नाम से सुख, संपन्नता और ऐश्वर्य का अर्थ निकलता था। गद्यांश में इसी अर्थ को समृद्धि-सूचक कहा गया है।

चरण 2: नाम न बताने का कारण स्पष्ट करें भक्तिन के वास्तविक जीवन में नाम के अनुरूप समृद्धि नहीं थी; उसका जीवन अभाव और कठिनाइयों से भरा था। इस कारण नाम और परिस्थिति में विरोधाभास था। वह इस असंगति को प्रकट नहीं करना चाहती थी। नौकरी माँगते समय उसने ईमानदारी से अपना नाम बता दिया, पर लेखिका से उसका उपयोग न करने की प्रार्थना की।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का समृद्धि-सूचक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। अपने अभावपूर्ण जीवन और समृद्धि-सूचक नाम के विरोधाभास के कारण वह इसे किसी को बताना नहीं चाहती थी।

त्वरित सुझाव: नाम के साथ उसका अर्थ भी लिखें और फिर जीवन की वास्तविक दशा से उसका विरोधाभास स्पष्ट करें।

11(ख). 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है' – कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दुर्वह का अर्थ है ऐसा भार जिसे उठाना कठिन हो।
- कथन में नाम के उच्च अर्थ और व्यक्ति की अपनी उपलब्धियों के मूल्यांकन का अंतर व्यक्त है।

चरण 1: नाम की विशालता समझाएँ यहाँ लेखिका महादेवी वर्मा अपने नाम महादेवी के उच्च और व्यापक अर्थ की ओर संकेत करती हैं। इस नाम में महानता और देवी जैसे श्रेष्ठ गुणों का भाव निहित है। ऐसा नाम धारण करने वाले व्यक्ति से बहुत ऊँचे आदर्शों और गुणों की अपेक्षा जुड़ जाती है। इसी अपेक्षा को नाम की विशालता कहा गया है।

चरण 2: दुर्वह होने का भाव स्पष्ट करें लेखिका विनम्रतापूर्वक मानती हैं कि वे अपने को नाम के इतने ऊँचे अर्थ के अनुकूल नहीं पातीं। इसलिए नाम की महानता उन्हें भारी लगती है। यह अपने प्रति उनका विनम्र मूल्यांकन है। वे इसी उदाहरण से भक्तिन की स्थिति समझाती हैं: जैसे उनका नाम महानता का सूचक है, वैसे भक्तिन का नाम समृद्धि का, जबकि उसका जीवन अभावपूर्ण है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि महादेवी नाम अत्यंत महान और उच्च गुणों का बोध कराता है। लेखिका स्वयं को उन अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं मानतीं, इसलिए नाम की महानता को अपने लिए कठिन भार कहती हैं। यह उनकी विनम्रता और आत्मचेतना का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: दुर्वह का शाब्दिक अर्थ देने के बाद नाम से जुड़ी ऊँची अपेक्षाओं और लेखिका की विनम्रता को स्पष्ट करें।

11(ग). 'नाम के विरोधाभासों' का आशय सोदाहरण समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम का अर्थ व्यक्ति के वास्तविक गुणों अथवा जीवन की दशा से मेल न खाए तो उसे नाम का विरोधाभास कहते हैं।
- प्रस्तुत अंश में लेखिका ने अपने और भक्तिन के नाम के अर्थ की तुलना उनके वास्तविक जीवन से की है।

चरण 1: विरोधाभास का अर्थ नाम सामान्यतः कोई शुभ गुण, आदर्श या सुखद स्थिति व्यक्त करता है, पर नाम रख देने से वह गुण अथवा स्थिति अपने-आप जीवन में नहीं आ जाती। जब नाम से निकलने वाला अर्थ और व्यक्ति का वास्तविक जीवन एक-दूसरे के विपरीत हों, तब नाम का विरोधाभास दिखाई देता है। यहाँ इसी अंतर की ओर संकेत किया गया है।

चरण 2: अंश से उदाहरण भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी है। लक्ष्मी का संबंध धन और समृद्धि से है, किंतु भक्तिन का जीवन अभावग्रस्त है और वह नौकरी खोजने आती है। इसलिए उसके नाम की समृद्धि और जीवन की निर्धनता में विरोध है। इसी तरह महादेवी नाम की विशालता लेखिका को अपने लिए दुर्वह लगती है; वे अपने को उस बड़े नाम के अनुरूप नहीं मानतीं।

चरण 3: निष्कर्ष नाम के अर्थ और व्यक्ति की वास्तविक दशा में असंगति ही नाम का विरोधाभास है। लक्ष्मी नाम वाली भक्तिन का समृद्ध होने के स्थान पर अभावों में जीना इसका स्पष्ट उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: पहले नाम का अर्थ बताइए, फिर उसी व्यक्ति की वास्तविक दशा रखकर दोनों का विरोध स्पष्ट कीजिए।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'भक्तिन की समृद्धि कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मी धन और समृद्धि का सूचक नाम है, जबकि भक्तिन का जीवन अभावों से जुड़ा हुआ है।
- कपाल की कुंचित रेखाएँ ललाट की रेखाओं अर्थात भाग्य का संकेत करती हैं।

चरण 1: कथन के शब्दों का अर्थ इस कथन में समृद्धि का संबंध भक्तिन के वास्तविक नाम लक्ष्मी से है। लक्ष्मी नाम धन-संपत्ति और सुख की कल्पना जगाता है। कपाल की कुंचित रेखाएँ उसके माथे की रेखाएँ हैं, जिनके माध्यम से उसके भाग्य की ओर संकेत किया गया है। इसलिए यह कथन केवल बाहरी रूप का वर्णन नहीं, उसके नाम और जीवन की असंगति को व्यक्त करता है।

चरण 2: जीवन की दशा से आशय स्पष्ट करना भक्तिन का नाम समृद्धि का सूचक होने पर भी उसके भाग्य में धन-संपत्ति और सुख नहीं आए। अभावों के कारण उसे जीविका के लिए नौकरी की खोज करनी पड़ती है। नाम में विद्यमान लक्ष्मी उसके वास्तविक जीवन में नहीं उतर सकी। इसी विडंबना के कारण वह अपना नाम बताने से भी बचती है और लेखिका से उसका उपयोग न करने की प्रार्थना करती है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि लक्ष्मी नाम होने पर भी भक्तिन को समृद्धि नहीं मिली; उसके भाग्य में अभाव और संघर्ष आए। कथन उसके समृद्धिसूचक नाम और विपन्न जीवन के विरोध को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: कपाल की रेखाओं को भाग्य का संकेत मानकर लक्ष्मी नाम की समृद्धि और भक्तिन के अभाव का संबंध जोड़िए।

अथवा

11. अथवा — बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति – शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। [8 अंक]

11(क). बाज़ार को सार्थकता कौन देता है? कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का उपयोग आवश्यकता की स्पष्ट पहचान से जुड़ा है।
- विवेकपूर्ण क्रय से ग्राहक और बाज़ार, दोनों का हित होता है।

चरण 1: सार्थकता देने वाले मनुष्य की पहचान बाज़ार को वही मनुष्य सार्थकता देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। इसका अर्थ है कि उसे अपनी वास्तविक आवश्यकताओं का स्पष्ट ज्ञान होता है। वह केवल धन होने के कारण सामान नहीं खरीदता, बल्कि पहले यह समझता है कि उसके जीवन में किस वस्तु की उपयोगिता है। गद्यांश में इसी स्पष्ट इच्छावाले व्यक्ति को बाज़ार के सही उपयोग का आधार बताया गया है।

चरण 2: सार्थकता देने की प्रक्रिया ऐसा व्यक्ति आवश्यकता के अनुरूप वस्तुएँ खरीदकर बाज़ार का लाभ उठाता है और उपयोगी वस्तुओं के लेन-देन को बढ़ाता है। उसकी खरीद दिखावे या क्रयशक्ति के घमंड का प्रदर्शन नहीं होती। इस प्रकार धन का प्रयोग जरूरत पूरी करने में होता है तथा बाज़ार भी अपने वास्तविक उद्देश्य को पूरा करता है। ग्राहक की आवश्यकता और विक्रेता की उपयोगी आपूर्ति के बीच यही संबंध बाज़ार को सार्थक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी वास्तविक आवश्यकता जानने वाला मनुष्य विवेकपूर्वक आवश्यक वस्तुएँ खरीदकर बाज़ार को सार्थकता देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले व्यक्ति की पहचान लिखें, फिर आवश्यकता के अनुसार खरीद को उसकी सार्थक भूमिका से जोड़ें।

11(ख). खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को क्या प्रदान करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्रयशक्ति का घमंड विवेकपूर्ण खरीद को बाधित करता है।
- गद्यांश धन के अहंकार को विनाशक, शैतानी और व्यंग्य की शक्ति से जोड़ता है।

चरण 1: गद्यांश में बताई गई शक्तियाँ खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति तथा व्यंग्य की शक्ति प्रदान करता है। जिसके पास धन है, पर अपनी आवश्यकता का ज्ञान नहीं है, वह केवल पैसे के अहंकार में खरीदारी करता है। ऐसी खरीद का उद्देश्य किसी उपयोगी जरूरत की पूर्ति नहीं रहता। गद्यांश इन शक्तियों का उल्लेख करके स्पष्ट करता है कि धन का गर्व बाज़ार की उपयोगिता को विकृत कर देता है।

चरण 2: घमंड के परिणाम का अर्थ ऐसे ग्राहक न तो बाज़ार से सही लाभ ले पाते हैं और न उसे सच्चा लाभ दे पाते हैं। उनकी खरीद में आवश्यकता और उपयोगिता का विवेक नहीं होता। इसलिए उनका पैसा बाज़ार की सार्थक भूमिका को मजबूत करने के स्थान पर उसका बाज़ारूपन बढ़ाता है। यहाँ विनाशक अथवा शैतानी शक्ति का आशय उस अनुचित प्रभाव से है जो धन के घमंड में होने वाले अनावश्यक क्रय से उत्पन्न होता है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रयशक्ति का घमंड बाज़ार को विनाशक, शैतानी तथा व्यंग्य की शक्ति देता है और उसका बाज़ारूपन बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश में आई तीनों शक्तियों के नाम लिखकर उन्हें आवश्यकता-विहीन खरीद से जोड़ना याद रखें।

11(ग). 'बाज़ार की सार्थकता' से क्या तात्पर्य है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की सार्थकता का आधार मनुष्य की वास्तविक आवश्यकता है।
- उपयोगी लेन-देन ग्राहक और बाज़ार, दोनों को लाभ देता है।

चरण 1: सार्थकता का तात्पर्य बाज़ार की सार्थकता से तात्पर्य उसके उस उपयोगी स्वरूप से है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। बाज़ार तभी अपना उद्देश्य पूरा करता है जब ग्राहक को पता हो कि उसे क्या चाहिए और वह उसी के अनुरूप खरीदारी करे। केवल धन खर्च करना या अनेक वस्तुएँ खरीद लेना उसकी सार्थकता नहीं है; खरीदी हुई वस्तु का आवश्यकता के साथ संबंध होना आवश्यक है।

चरण 2: गद्यांश के आधार पर व्याख्या गद्यांश में स्पष्ट इच्छावाले मनुष्य और क्रयशक्ति के घमंड में खरीदने वाले मनुष्य का अंतर बताया गया है। पहला व्यक्ति बाज़ार से उचित लाभ प्राप्त करता है और उपयोगी खरीद के माध्यम से उसे सच्चा लाभ देता है। दूसरा व्यक्ति इस उपयोगिता को समझे बिना बाज़ारूपन बढ़ाता है। इसलिए सार्थक बाज़ार वह है जिसमें जरूरत का विवेक बना रहे और लेन-देन मनुष्य के जीवन में उपयोगी भूमिका निभाए।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार की सार्थकता का अर्थ वास्तविक आवश्यकताओं की विवेकपूर्ण पूर्ति तथा ग्राहक और बाज़ार के बीच उपयोगी लेन-देन है।

त्वरित सुझाव: सार्थकता समझाते समय धन खर्च करने की मात्रा के बजाय आवश्यकता की पूर्ति और उपयोगिता पर ध्यान दें।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ारूपन बाज़ार की उपयोगी भूमिका के विकृत होने की स्थिति है।
- आवश्यकता का ज्ञान न रखने वाले धनाभिमानी ग्राहक इसे बढ़ाते हैं।

चरण 1: वे लोग कौन हैं इस कथन में वे लोग उन व्यक्तियों के लिए आया है जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, फिर भी अपनी क्रयशक्ति के घमंड में खरीदारी करते हैं। उनकी खरीद का आधार वास्तविक जरूरत का स्पष्ट ज्ञान नहीं, बल्कि धन होने का अहंकार है। इसलिए वे बाज़ार का विवेकपूर्ण उपयोग नहीं कर पाते। कथन को समझने के लिए पहले इन व्यक्तियों की पहचान करना आवश्यक है।

चरण 2: बाज़ारूपन बढ़ने का भाव ऐसे लोग अनावश्यक खरीद के माध्यम से बाज़ार में धन के प्रदर्शन और उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ाते हैं। इससे वस्तुओं के उपयोग और जरूरत की पूर्ति का महत्व घटता है तथा केवल खरीद-बिक्री का आकर्षण बढ़ता है। गद्यांश के अनुसार वे न बाज़ार से वास्तविक लाभ ले पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ देते हैं। इस प्रकार उनके आचरण से बाज़ार की सार्थकता कमजोर होती है और उसका विकृत व्यापारिक रूप अधिक प्रभावी बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि आवश्यकता जाने बिना धन के घमंड में खरीदने वाले लोग बाज़ार की उपयोगिता घटाकर अनावश्यक उपभोग और प्रदर्शन बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय वे लोग की पहचान और उनके आचरण से होने वाला प्रभाव, दोनों स्पष्ट करें।

12(क). भक्तिन की बेटी पर पंचायत के फैसले के बारे में अपने विचार लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यिक प्रसंग का मूल्यांकन करते समय घटना, पात्र की इच्छा और सामाजिक न्याय को साथ रखकर विचार करना चाहिए।
- भक्तिन की बेटी के प्रसंग में पंचायत का निर्णय पुरुषप्रधान समाज में स्त्री की असहाय स्थिति को प्रकट करता है।

चरण 1: घटना और निर्णय भक्तिन की बड़ी बेटी विधवा थी। उसके ताऊ का बेटा अपने तीतरबाज साले से उसका विवाह कराना चाहता था, पर बेटी उस व्यक्ति को पसंद नहीं करती थी। एक दिन वह व्यक्ति बेटी की कोठरी में घुस गया और उसके समर्थकों ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया। बेटी ने उसका प्रतिरोध किया। इसके बाद पंचायत ने दोनों के एक कोठरी में पाए जाने को आधार बनाकर उन्हें पति-पत्नी के रूप में रहने का निर्णय दे दिया।

चरण 2: निर्णय पर विचार मेरे विचार में यह फैसला अन्यायपूर्ण और स्त्री की स्वतंत्रता के विरुद्ध था। पंचायत ने यह जानने का प्रयास नहीं किया कि पुरुष भीतर कैसे पहुँचा और दरवाजा किसने बंद किया। उसने लड़की की असहमति और विरोध को भी महत्त्व नहीं दिया। षड्यंत्र तथा जबरदस्ती का शिकार हुई बेटी को ही सामाजिक मर्यादा के नाम पर दंड मिला, जबकि दोषी पुरुष को मनचाहा अधिकार मिल गया। न्यायोचित निर्णय में बेटी की इच्छा का सम्मान और षड्यंत्र करने वालों की जवाबदेही सुनिश्चित होनी चाहिए थी।

चरण 3: निष्कर्ष पंचायत का फैसला पक्षपातपूर्ण था। उसने वास्तविक अपराध की जाँच और भक्तिन की बेटी की सहमति की उपेक्षा करके पुरुषप्रधान सामाजिक व्यवस्था का समर्थन किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बंद कोठरी की घटना बताइए, फिर बेटी की सहमति और पंचायत की पक्षधरता के आधार पर अपना मत दीजिए।

12(ख). 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर मन भरा होने और मन खाली होने की स्थिति और उसके प्रभाव को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण मनुष्य की मानसिक स्थिति और अपनी आवश्यकताओं के प्रति उसकी स्पष्टता पर निर्भर करता है।
- मन भरा होने का अर्थ उद्देश्य और जरूरत का स्पष्ट बोध है; मन खाली होने का अर्थ इच्छाओं के लिए विवेकहीन खुलापन है।

चरण 1: मन भरा होने की स्थिति मन भरा होने का आशय यह है कि व्यक्ति जानता है कि उसे क्या चाहिए और किस वस्तु का उसके जीवन में वास्तविक उपयोग है। उसकी आवश्यकता निश्चित होने के कारण बाज़ार की चमक-दमक उसे अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए नहीं उकसा पाती। वह केवल जरूरी सामान लेकर लौटता है। ऐसा ग्राहक बाज़ार से उचित लाभ लेता है और उसे उपयोगी वस्तुओं के आदान-प्रदान का स्थान बनाए रखता है।

चरण 2: मन खाली होने की स्थिति और प्रभाव मन खाली होने पर व्यक्ति अपनी आवश्यकता के विषय में स्पष्ट नहीं होता। वह खरीदारी के निश्चित उद्देश्य के बिना बाज़ार जाता है और वहाँ दिखाई देने वाली हर आकर्षक वस्तु उसे पाने योग्य लगने लगती है। बाज़ार का जादू इसी अस्थिरता का लाभ उठाता है। व्यक्ति खरीदने की शक्ति होने पर अनावश्यक सामान इकट्ठा कर लेता है और बाद में उसकी अनुपयोगिता का अनुभव करता है। इसलिए लेखक मन को भरकर बाज़ार जाने की बात कहते हैं, जिससे इच्छा के स्थान पर आवश्यकता और विवेक खरीदारी का आधार बनें।

चरण 3: निष्कर्ष भरे मन वाला व्यक्ति आवश्यकता के अनुसार खरीदता है; खाली मन वाला व्यक्ति बाज़ार के आकर्षण में फँसकर अनावश्यक खरीदारी करता है। इस प्रकार मन की स्पष्टता उपयोगी उपभोग की रक्षा करती है।

त्वरित सुझाव: मन भरा होने को पेट भरा होना न समझें; इसे निश्चित जरूरत से जोड़कर खाली मन के अनियंत्रित आकर्षण से तुलना करें।

12(ग). चार्ली चैप्लिन कौन था? लेखक ने चैप्लिन का भारतीयकरण किसे कहा है और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली चैप्लिन की कला में हास्य और करुणा साथ उपस्थित हैं; उनका साधारण पात्र अपनी दुर्बलताओं के साथ दर्शकों से जुड़ता है।
- किसी कलाकार के भारतीयकरण का अर्थ उसकी कला-दृष्टि को भारतीय पात्रों, परिवेश और जीवनानुभव के अनुरूप रूप देना है।

चरण 1: चार्ली चैप्लिन का परिचय चार्ली चैप्लिन विश्वप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, निर्देशक और हास्य कलाकार था। विशेष रूप से मूक फिल्मों में उसने अपने अभिनय से व्यापक लोकप्रियता प्राप्त की। उसका साधारण, संघर्षशील और असहाय दिखाई देने वाला पात्र लोगों को हँसाता भी है और उनकी करुणा भी जगाता है। वह अपनी गलतियों और हास्यास्पद स्थितियों को छिपाता नहीं, बल्कि उन्हें मानवीय अनुभव बना देता है; इसीलिए अलग-अलग देशों के दर्शक भी उसमें अपना अंश पहचानते हैं।

चरण 2: भारतीयकरण का स्वरूप और कारण लेखक ने राजकपूर की फिल्मों, विशेषकर 'आवारा' और 'श्री 420' के नायक में चैप्लिन का भारतीयकरण देखा है। राजकपूर का भोला, गरीब और संघर्षशील नायक अपनी हँसी तथा ठोकरों के पीछे समाज की विषमता और मनुष्य की पीड़ा सामने लाता है। उसमें चैप्लिन की तरह हास्य के साथ करुणा जुड़ी हुई है, पर उसकी परिस्थितियाँ, व्यवहार और समस्याएँ भारतीय जीवन से आती हैं। इसीलिए यह केवल बाहरी वेशभूषा की नकल नहीं, चैप्लिन की मानवीय दृष्टि का भारतीय सामाजिक परिवेश में रूपांतरण है।

चरण 3: निष्कर्ष चैप्लिन विश्वविख्यात हास्य अभिनेता और फिल्मकार था। राजकपूर ने उसके हास्य-करुणा से जुड़े सामान्य नायक को भारतीय परिस्थितियों में प्रस्तुत किया; लेखक ने इसी को चैप्लिन का भारतीयकरण कहा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से पूरे करें: चैप्लिन का परिचय दें और राजकपूर की फिल्मों में हास्य, करुणा तथा भारतीय परिवेश का संबंध बताएँ।

12(घ). 'शिरीष के फूल' के संदर्भ में लेखक ने महात्मा गांधी को क्यों याद किया है? दोनों में क्या साम्य है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष का वृक्ष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवंतता और सहज प्रसन्नता बनाए रखने का प्रतीक है।
- लेखक महात्मा गांधी के व्यक्तित्व में भी बाहरी अशांति के बीच आंतरिक स्थिरता और लोकमंगल की साधना देखता है।

चरण 1: गांधी को याद करने का कारण हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष की उस विशेषता से प्रभावित हैं कि वह भीषण गर्मी, लू और वातावरण की कठोरता के बीच भी फूलता रहता है। विपरीत परिस्थितियाँ उसकी कोमलता और उल्लास को नष्ट नहीं कर पातीं। इसी प्रसंग में लेखक को महात्मा गांधी याद आते हैं। गांधी ने भी हिंसा, विद्वेष और अशांति से भरे वातावरण में अपने मन का संतुलन बनाए रखा तथा सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया। बाहरी संकट के सामने उनकी मानवीय संवेदना सूखी नहीं।

चरण 2: दोनों के स्वभाव का साम्य शिरीष वातावरण से जीवनरस खींचकर सरस रहता है; गांधी भी कठिन समय में आत्मबल से शक्ति पाकर जनजीवन में आशा और सद्भाव जगाते थे। दोनों की विशेषता विपरीत परिस्थितियों से हार मानने के स्थान पर अपनी सहजता बनाए रखना है। शिरीष की कोमल पुष्प-सृष्टि और गांधी की करुणा, दोनों कठोर वातावरण के बीच जीवन की सुंदरता बचाते हैं। यह साम्य केवल सहनशीलता का नहीं, कठिनाइयों के बीच भी दूसरों को सुख और शांति देने वाली सक्रिय जिजीविषा का है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक ने गांधी को इसलिए याद किया है कि शिरीष की तरह वे भी प्रतिकूल वातावरण में अविचल, सरस और जीवनदायी बने रहे। दोनों आत्मबल, अनासक्ति और कठिन परिस्थितियों में भी सहज उल्लास बनाए रखने के प्रतीक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले गर्मी में खिलते शिरीष का उल्लेख करें, फिर उसे गांधी के आत्मबल और अशांति में शांति देने वाले व्यक्तित्व से जोड़ें।

12(ङ). डॉ. आंबेडकर के मत में 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर स्वतंत्रता को केवल कानूनी अधिकार नहीं, व्यक्ति को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार जीवन चुनने का अवसर मानते हैं।
- दासता का अर्थ सामाजिक नियंत्रण के उस रूप से भी है जिसमें कुछ लोग दूसरों का पेशा और आचरण निर्धारित कर देते हैं।

चरण 1: दासता का व्यापक अर्थ डॉ. आंबेडकर के अनुसार दासता केवल वह स्थिति नहीं है जिसमें किसी मनुष्य को कानूनी रूप से दूसरे की संपत्ति बना दिया जाए। इसका व्यापक अर्थ समाज की वह स्थिति है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के व्यवहार और जीवन-निर्णयों पर नियंत्रण करने का अधिकार मिल जाता है। इस प्रकार व्यक्ति कानून की दृष्टि से स्वतंत्र दिखाई देने पर भी वास्तविक जीवन में पराधीन हो सकता है। इसलिए दासता को पहचानने के लिए केवल कानूनी दर्जा देखना पर्याप्त नहीं; व्यक्ति को उपलब्ध वास्तविक स्वतंत्रता भी देखनी चाहिए।

चरण 2: जाति और पेशे के संदर्भ में स्पष्टीकरण जाति-प्रथा के अंतर्गत यदि व्यक्ति को अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने की छूट नहीं मिलती और उसे जन्म के आधार पर निर्धारित काम ही करना पड़ता है, तो यह भी दासता का रूप है। दूसरे लोग उसके लिए तय करते हैं कि वह कौन-सा काम करे और कैसे जीवन बिताए। उसकी प्रतिभा और इच्छा की उपेक्षा होती है। आंबेडकर ऐसी सामाजिक व्यवस्था को स्वतंत्रता-विरोधी मानते हैं, क्योंकि आजीविका का चुनाव जीवन की दिशा तय करता है। इस चुनाव पर दूसरों का प्रभुत्व व्यक्ति की स्वतंत्रता को निष्प्रभावी कर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष आंबेडकर के मत में दासता का व्यापक अर्थ है दूसरों द्वारा मनुष्य के आचरण और जीवन पर नियंत्रण। जन्म से पेशा थोपना और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता छीनना भी इसी दासता के अंतर्गत आता है।

त्वरित सुझाव: कानूनी गुलामी और सामाजिक पराधीनता का अंतर स्पष्ट करें तथा जन्म के आधार पर पेशा थोपे जाने का उदाहरण अवश्य दें।

---

13. यशोधर पंत के जीवन से हमें किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? समीक्षा कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी पीढ़ियों के बदलते मूल्यों के बीच यशोधर पंत की परंपरानिष्ठ जीवन-दृष्टि को सामने रखती है।
- चरित्र की समीक्षा में उसके प्रेरक गुणों के साथ उसकी सीमाओं और परिस्थितियों को भी समझना आवश्यक है।

चरण 1: सादगी, ईमानदारी और अनुशासन यशोधर पंत का जीवन सादगी, कर्तव्यनिष्ठा और संयम की प्रेरणा देता है। वे बाहरी प्रदर्शन और बढ़ते उपभोक्तावाद से प्रभावित होकर अपना जीवन नहीं बदलना चाहते। परिवार के सदस्य उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ को नए ढंग से मनाते हैं, पर वे उत्सव के दिखावे से सहज नहीं हो पाते। उनके लिए जीवन का मूल्य चमक-दमक से अधिक नियमित आचरण और जिम्मेदारी में है। कार्यालय और घर के प्रति उनकी गंभीरता बताती है कि व्यक्ति को अपने दायित्व ईमानदारी से निभाने चाहिए। उनकी जीवन-दृष्टि अनावश्यक खर्च और प्रतिष्ठा की होड़ पर भी विचार करने को प्रेरित करती है।

चरण 2: कृतज्ञता, आत्मीयता और संवेदना किशनदा ने कठिन समय में यशोधर पंत को सहारा दिया था। यशोधर उनके उपकार और संस्कार भूलते नहीं। इससे बड़ों के प्रति सम्मान तथा सहायता करने वालों के प्रति कृतज्ञता का मूल्य सामने आता है। किशनदा के अकेलेपन और अंत की स्मृति उन्हें भीतर तक प्रभावित करती है। यह संवेदना दिखाती है कि मनुष्य का मूल्य केवल उसकी आर्थिक उपयोगिता से नहीं आँकना चाहिए। परिवार, परिचितों और पुराने संबंधों के प्रति उनका लगाव हमें मानवीय आत्मीयता बनाए रखने की प्रेरणा देता है। वे ऐसे संबंधों को महत्त्व देते हैं जिनमें व्यक्ति दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होता है।

चरण 3: मूल्यों की संतुलित समीक्षा यशोधर पंत की परंपरानिष्ठा सम्माननीय है, पर वे नए समय और परिवार की नई रुचियों के साथ पूरी तरह सामंजस्य नहीं बैठा पाते। इससे उनकी और परिवार की भावनाओं के बीच दूरी पैदा होती है। उनके चरित्र से यह सीख भी मिलती है कि सादगी और आत्मसम्मान को बचाते हुए संवाद तथा परिवर्तन के प्रति उदारता जरूरी है। पुत्र द्वारा दिए गए गाउन के प्रसंग में

उनकी भावुक प्रतिक्रिया यह प्रकट करती है कि वे वस्तु से अधिक उसके पीछे छिपी आत्मीयता और अपने लिए अपनत्व की चाह रखते हैं। इसलिए कहानी हमें पुरानी पीढ़ी का उपहास करने के बजाय उसकी भावनाएँ समझने का संकेत देती है। इसी प्रकार पुरानी पीढ़ी को भी नए स्नेह-प्रदर्शन की भाषा समझने का प्रयास करना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत हमें सादगी, ईमानदारी, अनुशासन, कृतज्ञता और मानवीय संबंधों की गरिमा की प्रेरणा देते हैं। उनके जीवन की समीक्षा यह भी सिखाती है कि इन मूल्यों को जीवित रखने के लिए समय के साथ संवाद, सहिष्णुता और आवश्यक लचीलापन बनाए रखना चाहिए।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में केवल गुण न गिनाएँ; किशनदा और वर्षगाँठ के प्रसंग से उन्हें पुष्ट करें तथा पीढ़ियों के संवाद की आवश्यकता भी लिखें।

14(क). लेखक ने कविता करना कैसे सीखा? मराठी शिक्षक के योगदान पर प्रकाश डालिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' में पढ़ाई के प्रति लगन के साथ लेखक की काव्य-प्रतिभा के विकास का वर्णन है।
- शिक्षक का भावपूर्ण काव्य-पाठ, प्रकृति का निरीक्षण और लगातार अभ्यास लेखक की कविता सीखने की प्रक्रिया के मुख्य आधार बने।

चरण 1: कविता के प्रति रुचि जागना लेखक के मराठी शिक्षक सौंदलगेकर कविता पढ़ाते समय स्वयं उसमें पूरी तरह रम जाते थे। उनके पास अनेक कविताएँ कंठस्थ थीं और उनका कंठ भी मधुर था। वे कविता के भाव, लय और छंद को जीवंत ढंग से प्रस्तुत करते थे। उनके मुख से कविता सुनकर लेखक को आनंद मिलता और वह पाठ को केवल परीक्षा की वस्तु नहीं समझता था। कविता का संगीत और भाव उसके मन में बसने लगे।

चरण 2: शिक्षक से अभिव्यक्ति की प्रेरणा मिलना सौंदलगेकर अपने अनुभवों और कवियों से जुड़ी बातों का उल्लेख करते तथा अपनी बनाई कविताएँ भी सुनाते थे। इससे लेखक को लगा कि कवि भी सामान्य मनुष्य होते हैं और अपने आसपास के अनुभवों को कविता का रूप देते हैं। वह भी अपने देखे हुए पेड़-पौधों, खेतों और प्राकृतिक दृश्यों पर कविता बना सकता है। इस बोध ने कविता रचने के प्रति उसका संकोच दूर किया। शिक्षक का आत्मीय प्रोत्साहन उसकी प्रतिभा को पहचानने और विकसित करने में सहायक हुआ।

चरण 3: अनुकरण से स्वतंत्र रचना की ओर बढ़ना खेत में पानी लगाते समय लेखक पढ़ी हुई कविताएँ गुनगुनाता और शिक्षक की तरह उनका सस्वर पाठ करता था। फिर वह उन्हीं धुनों और छंदों पर अपने शब्द जोड़कर पंक्तियाँ बनाने लगा। काम के बीच आसपास की प्रकृति उसके लिए काव्य-सामग्री बन गई। अकेले में कविता दोहराने से उसकी लय और अभिव्यक्ति का अभ्यास होता रहा। वह अपनी बनाई रचनाएँ शिक्षक को सुनाता था। उनकी सराहना और मार्गदर्शन से उसका विश्वास बढ़ा और वह अधिक सजग होकर कविता बनाने लगा। इस प्रकार सुनने, अनुकरण करने, अनुभवों को शब्द देने और सुधारने के क्रम में उसने कविता करना सीखा।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक की काव्य-प्रतिभा को सौंदलगेकर के रसपूर्ण शिक्षण ने जगाया और निरंतर अभ्यास ने निखारा। शिक्षक ने कविता से परिचय कराने के साथ उसे स्वयं रचना करने का साहस और प्रेरणा भी दी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिक्षक का सस्वर पाठ, कवि बनने का विश्वास और खेतों में लेखक का रचना-अभ्यास—इन तीनों को क्रम से जोड़िए।

14(ख). 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का 'अतीत में दबे पाँव' मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु घाटी सभ्यता की नगर-व्यवस्था, जीवन-दृष्टि और सांस्कृतिक परिपक्वता को सामने लाता है।
- भवनों और वस्तुओं के ठोस साक्ष्यों से विशेषताएँ बतानी चाहिए; लिपि पढ़ी न जा सकने के कारण अनजानी बातों को निश्चित इतिहास नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: सुव्यवस्थित नगर-योजना और स्वच्छता मोहनजोदड़ो का नियोजित नगर इस सभ्यता की प्रमुख उपलब्धि है। सड़कें, गलियाँ और मकान एक सुव्यवस्थित योजना के अनुसार बनाए गए थे। पकी ईंटों के घरों में आँगन, स्नान की व्यवस्था और कुएँ मिलते हैं। घरों का पानी नालियों से निकलकर नगर की जल-निकासी व्यवस्था से जुड़ता था। इससे पता चलता है कि लोगों को व्यक्तिगत सुविधा के साथ सार्वजनिक सफाई का भी ध्यान था। विशाल स्नानागार जल-प्रबंधन और सामुदायिक जीवन की उन्नत समझ का प्रमाण है।

चरण 2: विकसित शिल्प, व्यापार और नागरिक जीवन वहाँ प्राप्त मुहरें, मिट्टी के बर्तन, मूर्तियाँ, आभूषण और अन्य उपयोगी वस्तुएँ शिल्पकला की कुशलता दिखाती हैं। माप-तौल की व्यवस्था और व्यापार के साक्ष्य आर्थिक जीवन के विकास का परिचय देते हैं। कलात्मक वस्तुओं से सौंदर्यबोध तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं से सामान्य नागरिकों के जीवन का पता चलता है। नर्तकी की कांस्य प्रतिमा जैसे अवशेष धातुकला और मानवीय आकृति गढ़ने की दक्षता को व्यक्त करते हैं। खेती, शिल्प और व्यापार इस समृद्ध नगर-सभ्यता के आधार रहे होंगे।

चरण 3: संयमित संस्कृति और मानवीय दृष्टि लेखक विशेष रूप से इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि इस सभ्यता में भव्य राजमहलों, विशाल मंदिरों या राजसत्ता के दिखावे के स्थान पर नागरिक सुविधाएँ अधिक उभरती हैं। कला में भी अनावश्यक भव्यता की अपेक्षा सुघड़ता और उपयोगिता दिखाई देती है। यहाँ की पहचान सत्ता के स्मारकों से अधिक सामान्य जीवन की सुव्यवस्था से बनती है। इसीलिए लेखक इसे कमोबेश समतामूलक और आडंबर से दूर सभ्यता के रूप में देखते हैं। फिर भी उसकी अपठित लिपि और अधूरी जानकारी के कारण सभी सामाजिक या धार्मिक बातों पर अंतिम निर्णय नहीं दिया जा सकता।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ सुनियोजित नगर, विकसित जल-निकासी, सामुदायिक सुविधाएँ, कुशल शिल्प और व्यापार तथा संयमित सौंदर्यबोध हैं। 'अतीत में दबे पाँव' इन अवशेषों में एक परिपक्व नागरिक संस्कृति की झलक दिखाता है।

त्वरित सुझाव: हर विशेषता के साथ एक साक्ष्य दीजिए—स्वच्छता के लिए नालियाँ, सामुदायिक व्यवस्था के लिए स्नानागार और शिल्प के लिए मुहरें या मूर्तियाँ।